हिन्दी

व्याकरण एवं रचना

Teachers' Manual

कक्षा 6

हिन्दी व्याकरण एवं रचना कक्षा - 6

अध्याय-1 भाषा, बोली, लिपि एवं व्याकरण

1. (क) (द) मातृभाषा (ख) (अ) दो।

2. भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने मनोभावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के मनोभाव एवं विचार सरलता से हम तक पहुँचते हैं।

3. भाषा के दो रूप हैं— (1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा। एक तीसरा रूप सांकेतिक भाषा को भी माना गया है।

4. **राजभाषा—**यह सरकारी कार्यालयों की कामकाजी भाषा है। हिन्दी के अलावा अंग्रेजी तथा उर्दू हमारी राजभाषा है।
मातृभाषा—बालक द्वारा अपने घर-परिवार में सीखी गई भाषा अथवा मातृभूमि की भाषा मातृभाषा कहलाती है।

5. 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। क्योंकि 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया था।

6. मैं पश्चिमी राजस्थान का निवासी हूँ। मेरे घर में मातृभाषा मारवाड़ी का प्रयोग होता है।

7. नेपाल की मुख्य भाषा नेपाली है। इसकी लिपि देवनागरी है।

8. मेरी अंग्रेजी की शिक्षिका की मातृभाषा हाड़ौती है।

9. (क) देवनागरी, (ख) शुद्ध, (ग) 14 सितम्बर, (घ) मातृभाषा, (ङ) लिखित।

10. (क) ✗, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✗, (ङ) ✓, (च) ✗

11. भाषा का लिखित रूप— ई-मेल, पत्र, पुस्तक, समाचार पत्र।
भाषा का मौखिक रूप — भाषण, वार्तालाप, मोबाइल फोन पर बात करना।
भाषा का संकेतिक रूप — बच्चे का रोना, पक्षियों की चहचहाहट, पुलिस द्वारा ट्रैफिक नियंत्रण।

12.

लिपि	भाषा
गुरुमुखी	पंजाबी
रोमन	अंग्रेजी
देवनागरी	हिंदी
फारसी	उर्दू

खेल-खेल में

1. **बोलियों की सूची—**

(i)	पश्चिमी राजस्थान	—	मारवाड़ी
(ii)	उत्तर-पूर्वी राजस्थान	—	मेवाती, अहीरवाटी
(iii)	मध्य-पूर्वी राजस्थान	—	ढूँढाडी, हाडौती
(iv)	दक्षिण-पूर्वी राजस्थान	—	मालवी
(v)	दक्षिणी राजस्थान	—	निमाड़ी

एक अन्य स्वतंत्र भाषा बंजारा है।

2. (क) संस्कृत (ख) प्राकृत

3. (क) पद्मनाभ कवि कृत कान्हडदेप्रबंध (ख) बेलि क्रिसन रुकमणी री

अध्याय–2 वर्ण–विचार

1. **(क)** (ब) 33, **(ख)** (अ) 2।
2. भाषा की सबसे छोटी व अखंड इकाई अथवा ध्वनि 'वर्ण' कहलाती है।
3. **ह्रस्व स्वर—** जिन स्वरों के उच्चारण में कम से कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहा जाता है। इनकी संख्या चार है— अ, इ, उ तथा ऋ।

   दीर्घ स्वर— जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा अधिक समय लगे तो उन स्वरों को दीर्घ स्वर कहते हैं। ये सात हैं— आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
4. हिन्दी में कुछ वर्ण न तो स्वर ही होते हैं और न ही व्यंजन। वे अयोगवाह कहलाते हैं। जैसे— अं, अः।
5. **स्पर्श व्यंजन—**इनका उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों जैसे—कंठ, तालु मूर्धा, दन्त अथवा होठ में से किसी एक का स्पर्श करती है। उदाहरण— क, च, ट, त, प आदि ।
6. **व्यंजन के भेद—**उच्चारण के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं— 1. स्पर्श व्यंजन, 2. अंत:स्थ व्यंजन, 3. ऊष्म व्यंजन।
7. मस्त, भ्रम, परमात्मा, विश्वास, मुस्कान।
8. क्ष—क्षमा, क्षत्रिय, अक्षर

   त्र—पत्र, त्रिशूल, मित्र

   ज्ञ—ज्ञान, विज्ञान, यज्ञ

   श्र—श्रम, श्रवण, श्रेष्ठ
9. **(क) गुरुद्वारा—**ग् + उ + र् + उ + द् + व् + आ + र् + आ

   (ख) साइकिल—स् + आ + इ + क् + इ + ल् + अ

   (ग) व्याकरण—व् + य् + आ + क् + अ + र् + अ + ण् + अ

   (घ) परिवार—प् + अ + र् + इ + व् + आ + र् + अ

   (ङ) वृंदावन—व् + ऋ + अं + द् + आ + व् + अ + न् + अ
10. **(क)** राजस्थान **(ख)** बालिका **(ग)** मोबाइल **(घ)** ड्रम।
11. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✗, (घ) ✓
12. (क) रंग फूँस

    (ख) बंदर दाँत

    (ग) अंडा आँगन

    (घ) संबंध चाँद

    (ङ) पतंग हँसना

● ***खेल-खेल में***

1. रेफ रूप (र्)— सूर्य, कर्म, पर्व

   पदेन रूप (्र)— प्रकाश, क्रम, भ्रम

   ट/ड के नीचे पदेन (्र)— ट्रक, ड्रम, ट्रेन
2. (क) फन— हुनर

   फ़न— साँप का हुड

   (ख) सजा— सजाना

   सज़ा— दण्ड

(ग)	राज–	शासन	(ङ)	खाना–	भोजन करना
	राज़–	रहस्य		ख़ाना–	दराज
(घ)	खुदा–	खोदा हुआ	(च)	जरा–	बुढ़ापा
	ख़ुदा–	भगवान		ज़रा–	थोड़ा सा

अध्याय–3 शब्द–विचार

1. **(क)** (स) विम्यत, **(ख)** (द) योगरूढ़।
2. **शब्द**–वर्णों या अक्षरों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।
3. **शब्द**–वर्णों के उस समूह को शब्द कहा जाता है, जिसका कुछ अर्थ हो। जैसे– कमल।
   पद–जब व्याकरण के नियमों के अनुसार शब्द का वाक्य में प्रयोग होता है, तो वह 'पद' कहा जाता है।
4. **शब्द के भेद**–शब्द के चार भेद हैं– 1. उत्पत्ति या स्रोत के आधार पर 2. अर्थ के आधार पर 3. व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर 4. प्रयोग के आधार ।
5. **यौगिक शब्द**–वे शब्द जो अनेक सार्थक शब्दों के मेल से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–पुस्तकालय, जलयान।
   योगरूढ़ शब्द–वे शब्द जो यौगिक तो होते हैं किन्तु सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे– महात्मा, हिमालय।
6. **विकारी**– घोड़ा, मैं, बुरा, खाता
   अविकारी– तेज, जोर, धीरे, अथवा
7. एक ही अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को एकार्थी शब्द कहते हैं।
8. (क) ✓, (ख) ✗, (ग) ✓, (घ) ✓
9. **श्याम**–श्रीकृष्ण, काला।
   जलज–कमल, शंख।
   पय–दूध, जल।
   तीर–बाण, किनारा।
10.

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
कंटक	**काँटा**	गृह	**घर**
कूप	**कुँआ**	जिह्वा	**जीभ**
स्वर्ण	**सोना**	अश्रु	**आँसू**
नासिका	**नाक**	अस्थि	**हड्डी**
हस्त	**हाथ**	दुग्ध	**दूध**
पुष्प	**पुहुप**	कर्ण	**कान**

11.

हिमालय	**योगरूढ़ शब्द**	फल	**रूढ़ शब्द**
विद्यालय	**यौगिक शब्द**	वायुयान	**यौगिक शब्द**
त्रिनेत्र	**योगरूढ़ शब्द**	गजानन	**योगरूढ़ शब्द**
समुद्र	**रूढ़ शब्द**	प्रधानमंत्री	**योगरूढ़ शब्द**

12.

अफसोस	**खेद**	गैस	**वायु**
पैंट	**पतलून**	जेल	**कारागार**
खबर	**समाचार**	इज़्जत	**सम्मान**
डॉक्टर	**चिकित्सक**	ऑफिस	**कार्यालय**

13.

विकारी शब्द	**अविकारी शब्द**
घोड़ा	अथवा
चूहा	जोर

● ***खेल-खेल में***

(क)

अंग्रेजी शब्द	**टेबिल, स्टेशन**	अरबी शब्द	**नकल, किताब, साबुन**
देशज शब्द	**डिबिया**	पुर्तगाली शब्द	**सुरंग**
तत्सम शब्द	**पत्र अश्रु, दिन**	तद्भव शब्द	**खेत**
फारसी शब्द	**आलू जूता, सरदार, जमीन**	तुर्की शब्द	**कुली**

(ख) कूलर, पुस्तकालय, प्रधानाचार्य, मोबाइल, राजस्थान।

अध्याय–4 उपसर्ग तथा प्रत्यय

1. **(क)** (अ) दुर्, **(ख)** (ब) लोहार।
2. जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन करके कुछ विशेषता लाते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
3. हिन्दी में चार प्रकार के उपसर्ग होते हैं— 1. संस्कृत उपसर्ग, 2. उर्दू उपसर्ग, 3. हिन्दी उपसर्ग, 4. संस्कृत के अव्यय।
4. **प्रत्यय—** वे शब्दांश जो शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।
5. प्रत्यय के मुख्यत: दो भेद हैं— 1. कृत् प्रत्यय, 2. तद्धित प्रत्यय।

6.

शब्द	**उपसर्ग**	**नया शब्द**	**भेद (उपसर्ग)**
देसी	पर	परदेसी	हिन्दी उपसर्ग
पता	ला	लापता	उर्दू उपसर्ग
होनी	अन	अनहोनी	हिन्दी उपसर्ग
शासन	अनु	अनुशासन	हिन्दी उपसर्ग
जय	परा	पराजय	हिन्दी उपसर्ग
लोक	पर	परलोक	संस्कृत उपसर्ग
मान	अप	अपमान	हिन्दी उपसर्ग

7.

शब्द	**उपसर्ग**	**शब्द**	**उपसर्ग**
निपुण	नि	अमान्य	अ
अत्याचार	अति	अज्ञान	अ
कमजोर	कम	प्रताप	प्र
सहपाठी	सह	निबंध	नि
बाइज्जत	बा	परिवहन	परि
समुचित	सम	अवमानना	अव

8.

शब्द	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**	**शब्द**	**प्रत्यय**	**मूल शब्द**
भुलक्कड़	अक्कड़	भुल	दयालु	आलु	दया

	लड़ाका	आका	लड़	लड़ाकू	आकू	लड़
	लुटेरा	ऐरा	लूट	चढ़ावा	आवा	चढ़
	बोली	ई	बोल	कृपालु	आलु	कृपा
9.	आलु	दयालु	कृपालु	आहट	घबराहट	खिलखिलाहट
	हार	पालनहार	सृजनहार	एरा	सँपेरा	मछेरा
	तम	निकटतम	दीर्घतम	आवट	लिखावट	दिखावट
	अक	बैठक	बंधक	आन	कटान	लदान

10.	दिख	+	आवट	=	दिखावट	अच्छा	+	ई	=	अच्छाई
	हँस	+	ना	=	हँसना	लोहा	+	आर	=	लोहार
	पढ़	+	आई	=	पढ़ाई	मोटा	+	पन	=	मोटापन
	भूल	+	आ	=	भूला	चोर	+	ई	=	चोरी
	फूल	+	दान	=	फूलदान	चार	+	आ	=	चारा

खेल-खेल में

अनु — अनुच्छेद, अनुगामी, अनुशासन, अनुकूल

हर — हरदम, हर साल, हर दिन, हरपल

नि — निषेध, निवास, निबंध, निडर

वि — विशुद्ध, विज्ञान, विख्यात, विशेष

अध्याय–5 संधि एवं समास

1. **(क)** (अ) विद्यालय, **(ख)** (स) माता-पिता।
2. **संधि—** निकटवर्ती वर्णों अथवा स्वरों के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को संधि कहते हैं।
3. संधि तीन प्रकार की होती हैं—

   (i) स्वर संधि— दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर संधि कहते है। उदाहरण— गिरि + ईश (ई + ई = ई) गिरीश।

   (ii) व्यंजन संधि— जब किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन से मेल होकर सार्वग परिवर्तन हो जाए तो उसे व्यंजन संधि कहते हैं। उदाहरण— दिक् + गज = दिग्गज।

   (iii) विसर्ग संधि — विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से होने वाले सार्थक परिवर्तन को विसर्ग संधि कहते हैं। उदाहरण— अधः + गति = अधोगति।
4. **स्वर संधि के उदाहरण**— दीप् + अवली = दीपावली। राजा + इंद्र = राजेंद्र।

   व्यंजन संधि के उदाहरण— जगत् + ईश = जगदीश। दिक् + अंबर = दिगंबर।
5.

दीर्घ संधि	पर	+	आधीन	=	पराधीन।	स्व	+	अर्थ	=	स्वार्थ।
गुणसंधि	हित	+	उपदेश	=	हितोपदेश।	राजा	+	इन्द्र	=	राजेन्द्र।
वृद्धि संधि	एक	+	एक	=	एकैक।	पुत्र	+	ऐषणा	=	पुत्रैषणा।
यण संधि	यदि	+	अपि	=	यद्यपि।	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक।
अयादि संधि	ने	+	अन	=	नयन।	पौ	+	अन	=	पवन।

6. संधि विच्छेद

दु : + बल, नि: + रोगी, जगत् + ईश, पुस्तक + आलय, पो + इत्र = पवित्र महा + उत्सव

7. समास—दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से निर्मित सार्थक शब्द समास कहलाता है।

8.

1.	कर्मधारय समास	कमलनयन	कमल के समान नयन
	बहुव्रीहि समास		कमल जैसे नयन हैं जिसके अर्थात् विष्णु
2.	कर्मधारय समास	घनश्याम	घन के समान श्याम (काला)
	बहुव्रीहि समास		घन के जैसा वर्ण है जिसका अर्थात् श्रीकृष्ण

9. समास के भेद—हिंदी में समास में छह भेद हैं— 1. अव्ययीभाव समास 2. तत्पुरुष समास 3. कर्मधारय समास 4. द्विगु समास 5. द्वंद्व समास 6. बहुव्रीहि समास।

10. कर्मधारय समास एवं बहुव्रीहि समास में अंतर—वह समास जिसका पूर्व पद विशेषण तथा उत्तर पद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। जैसे— महाराजा = महान है जो राजा। जबकि जिस समास के पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही गौण हों, उनके स्थान पर कोई अन्य पद प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। जैसे— लंबोदर—लंबा उदर—लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश।

11. द्विगु समास— जिस समास में पूर्व पद संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। इसमें समूह का बोध होता है।

जैसे— दोपहर —	दो	+	पहर दो पहरों का समूह
पंचमढ़ी—	पाँच	+	मढ़ी पाँच मढ़ियों का समूह

बहुव्रीहि समास—जिस समास में पूर्व पद एवं उत्तर पद दोनों ही गौण हों और उनके स्थान पर अन्य कोई पद प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

	पूर्व पद	उत्तर पद	समास–विग्रह
जैसे— लंबोदर =	लंबा	उदर	लंबा है उदर (पेट) जिसका अर्थात् गणेश।

12.

	समास	**समास-विग्रह**	**भेद**
(क)	करोड़पति	करोड़ों का पति	तत्पुरुष समास
(ख)	पंचतत्व	पंच तत्व	द्विगु समास
(ग)	चतुर्भुज	चार हैं जिसकी भुजाएँ अर्थात् विष्णु	बहुव्रीहि समास
(घ)	दिन–रात	दिन और रात	द्वन्द्व समास
(ङ)	महादेव	महान है जो देव अर्थात् शिव	बहुव्रीहि समास
(च)	हाथों हाथ	हाथों ही हाथों में	अव्ययी भाव समास

13.

	समास विग्रह	**समास**	**समास का भेद**
(क)	शक्ति के अनुसार	यथाशक्ति	अव्ययी भाव समास
(ख)	महान है जो आत्मा	महात्मा	बहुव्रीहि समास
(ग)	लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश	लंबोदर	बहुव्रीहि समास
(घ)	कमल के समान चरण	चरण कमल	कर्मधारय समास
(ङ)	गुण तथा दोष	गुण–दोष	द्वन्द्व समास
(च)	आठ आनों का समूह	आठाना	द्विगु समास

● ***खेल-खेल में***

1.

महा	+	आत्मा	=	महात्मा	दीर्घ संधि
सूर्य	+	उदय	=	सूर्योदय	गुण संधि

ने + अन = नयन अयादि संधि

विद्या + आलय = विद्यालय दीर्घ संधि

2. **अव्ययीभाव**—रातोंरात आजन्म। **तत्पुरुष**—गृह प्रवेश, पंकज, घुड़दौड़।

कर्मधारय—महादेव। **द्विगु**—त्रिनेत्र, दोपहर, त्रिभंगी, चतुर्मास, शताब्दी।

द्वंद्व—भाई-बहिन, रात-दिन। **बहुव्रीहि**—महादेव, पुरुषोत्तम।

अध्याय–6 संज्ञा

1. **(क)** (अ) तीन, **(ख)** (अ) सैनिक
2. **संज्ञा**—किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
3. संज्ञा के प्रमुख तीन भेद हैं—व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक।
4. किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा कहलाते हैं, जबकि जातिवाचक संज्ञा शब्द वे कहलाते हैं जो एक ही प्रकार के सभी व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का बोध कराते हैं।
5. व्यक्तिवाचक संज्ञा— गीता, यमुना, मथुरा।
   जातिवाचक संज्ञा—मोर, सड़क, सैनिक।
6. संज्ञा के दो अन्य भेद—(अ) समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा (ब) द्रव्यवाचक संज्ञा।
7. भाववाचक संज्ञा—जिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान के गुण-दोष या हमारे मन के भाव का बोध हो, वह भाववाचक संज्ञा कहलाता है। उदाहरण—मेहनत, गर्मी, सर्दी।
8. खट्टा - खटाई। पढ़ना - पढ़ाई।
9. (क) दौड़ (ख) व्यक्ति, ध्यान (ग) ताजमहल (घ) दूध (ङ) कक्षा
10. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—भारत, पेट, सूर्योदय।
    जातिवाचक संज्ञा—किसान, कृषि, जनसंख्या, खेती, भारतवासियों, बैल, ऋतु।
    भाववाचक संज्ञा—मेहनत, गर्मी, सर्दी, बरसात।
11. (क) सिंचाई (ख) चौड़ाई (ग) हार (घ) पढ़ाई (ङ) मजदूरी
    (च) आपा (छ) कवित्व (ज) धीरता
12. (क) ह्वेल (ख) ललकार (ग) हिमालय (घ) गंगा (ङ) गायक
    (च) कमल (छ) बुध (ज) हिन्दी (झ) राजस्थान (ञ) दिल्ली।
13. **(क)** [✗], **(ख)** [✓], **(ग)** [✓], **(घ)** [✓], **(ङ)** [✓], **(च)** [✓]
14. विद्यालय, जयपुर, रोटी, खेल का मैदान, सब्जियाँ, पुस्तक, पेंसिल, पोस्ट-ऑफिस, कार्यालय, बनियान, नेकर, पेंट, शर्ट, जूता, चप्पल, चौपाल, चरागाह आदि।

● ***खेल-खेल में***

लड़के—जातिवाचक संज्ञा, सोना—द्रव्यवाचक संज्ञा, इंदिरा गांधी—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पेड़—जातिवाचक संज्ञा, आम—व्यक्तिवाचक संज्ञा, लड़का—जातिवाचक संज्ञा, गाय—जातिवाचक संज्ञा।

अध्याय–7 लिंग तथा वचन

1. **(क)** (स) कछुआ, **(ख)** (द) तितलियाँ।
2. **लिंग**—वे शब्द रूप जो प्रयोग में पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराते हैं, लिंग कहलाते हैं।

3. लिंग की पहचान—पुल्लिंग— जिन शब्दों में आ, आव, पा, न, क आदि प्रत्यय जुड़े हों वे सामान्यत: पुल्लिंग होते हैं। सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यत: पुल्लिंग होते हैं। जैसे—हिमालय, आम, रविवार, शुक्र आदि।

अनाजों के नाम—	गेहूँ, चना, चावल आदि।
सागर, महासागरों के नाम—	काला सागर, हिन्द महासागर आदि।
रत्नों के नाम—	मूँगा, हीरा आदि।
कुछ धातुओं का नाम—	सोना, ताँबा आदि।
शरीर के कुछ अंग—	मुँह, दाँत, कान आदि।

यदि शब्दों में खाना, वाला, दान तथा ऐरा आदि प्रत्यय का प्रयोग हो तो— जैसे—दवाखाना, पानवाला, पीकदान, चचेरा, फुफेरा आदि।

स्त्रीलिंग—जिन शब्दों के अंत में इया, ई, आवट, आहट, ता, आई आदि प्रत्यय हों तो वे शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

जैसे— ई	—	खड़ी, हिन्दी, बिन्दी	आवट	—	मिलावट, सजावट
आहट	—	मुस्कुराहट, गरमाहट	ता	—	मित्रता, शत्रुता।
इया	—	बंदरिया, चुहिया	आई	—	लड़ाई, सिलाई।

नदियों के नाम	—	गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि।
भाषा एवं बोलियों के नाम	—	अवधी, खड़ी बोली, हिन्दी।
शरीर के कुछ अंग	—	नाक, आँख, जीभ आदि।
कुछ समूहवाचक शब्द	—	पुलिस, भक्त-मंडली, सेना, सभा आदि।

4. वचन के मुख्यत: दो भेद हैं— 1. एकवचन, 2. बहुवचन।

1. एकवचन—आदमी ने टोपी पहन रखी है। पक्षी पेड़ पर बैठा है।
   'आदमी, टोपी' तथा 'पक्षी, पेड़' शब्द किसी एक वस्तु या प्राणी की जानकारी दे रहे हैं। ऐसे शब्द एकवचन शब्द हैं। अत: वे शब्द जो किसी वस्तु या प्राणी का संख्या में एक होने का बोध कराते हैं, एकवचन कहलाते हैं।
2. बहुवचन—सभी आदमियों ने टोपियाँ पहन रखी हैं। पक्षियों का झुंड पेड़ पर बैठा है। 'आदमियों, टोपियाँ', 'पक्षियों' शब्द एक से अधिक होने की जानकारी दे रहे हैं । अत: ये शब्द अनेक अर्थात् बहुवचन हैं।
   अत: वे शब्द जो किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति के संख्या में एक से अधिक होने का बोध कराते हैं, बहुवचन कहलाते हैं।

5. पाँच सदैव स्त्रीलिंग शब्द—हिन्दी, मित्रता, माला, पूर्णिमा, पंक्ति।

6. स्त्रीलिंग के नियम— 1. अकारान्त पुल्लिंग शब्दों को आकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे—छात्र-छात्रा।

2. अकारान्त एवं आकारान्त शब्दों को ईकारान्त कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं। जैसे—लड़का-लड़की, नर-नारी।

पुल्लिंग के नियम—1. जिन शब्दों के अन्त में आ, पा, या, पन रहता है, वे प्राय: पुल्लिंग होते हैं। जैसे— पाना, दाना।

2. सभी पहाड़ों, वृक्षों, दिनों, ग्रहों के नाम सामान्यत: पुल्लिग होते हैं। जैसे— गेहूँ, सागर, सोना आदि।

7. सदैव पुल्लिग—बाल, चित्र, हीरा, पीकदान।

सदैव स्त्रीलिंग—जीभ, लड़ाई, मेज, मंडली, कुर्सी, कमर, गरमाहट।

8. (क) **अभिमानिनी औरत** से कोई बात नहीं करना चाहता।

(ख) **धोबिन ने** आज कपड़े नहीं दिये थे।

(ग) **प्रधानाचार्या** पद की गरिमा के अनुकूल बात करती है।

(घ) **गायिका** का गायन कमाल का था।

(ङ) **कवयित्री** की तान से श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए।

(च) **शेर** जंगल में घूम रहा है।

9.

	शब्द	**लिंगभेद**	**वाक्य**
(क)	हवन	पुल्लिग	यज्ञशाला में हवन हो रहा है।
(ख)	चाय	स्त्रीलिंग	चाय पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
(ग)	बस्ता	पुल्लिग	मेरा बस्ता किधर रखा है।
(घ)	पुस्तक	स्त्रीलिंग	पुस्तक उधर रख दो।
(ङ)	कलम	स्त्रीलिंग	रमेश की कलम चोरी हो गई।
(च)	गिलास	पुल्लिग	एक गिलास दूध पी लो।
(छ)	सिनेमा	पुल्लिग	कोरोना के कारण आजकल सभी सिनेमा हाल बंद हैं।
(ज)	बस	स्त्रीलिंग	स्कूल की बस खराब हो गई।
(झ)	गृहकार्य	पुल्लिग	आज मैंने गृह कार्य पूरा कर लिया है।
(ञ)	सड़क	स्त्रीलिंग	यह सड़क जयपुर को जाती है।

10. (क) वीरांगना, (ग) कवयित्री, (ङ) आचार्या, (छ) यशस्विनी, (ह्य) रूपवती, (ट) चिड़िया/चिड़ी, (ख) ऊँटनी, (छ) विदुषी, (झ) बेटी, (ञ) बिलौटा/नर बिल्ली, (ट) मादा भालू, (ठ) इंद्राणी।

11. (क) [✓], (ख) [✗], (ग) [✗], (घ) [✓], (ङ) [✓], (च) [✗]

12. (क) ग्वालिन, (ख) छात्र (ग) वीरांगना (घ) सड़क (ङ) कवि (च) चिड़िया

13. चिड़ियाँ, माताएँ, नदियाँ, मालाएँ, गायिकाएँ, शत्रु, मित्र, चौराहे, आँखें, पर्वत।

14. (क) बच्चा पतंग उड़ा रहा है।

(ख) सैनिकों ने शत्रुओं पर आक्रमण किया।

(ग) रेगिस्तान में ऊँट पर सवारी की जाती है।

(घ) क्यारियों में मिर्चों के पौधे लग रहे हैं।

(ङ) चोर ने व्यापारी का वाहन चुरा लिया।

15. (क) हाथी आ रहा है।

(ख) सूरज पूर्व दिशा में उदय हो रहा है।

(ग) गायक मधुर स्वर में गा रहा है।

(घ) उपवन में अनेक वृक्षों पर चिड़ियाँ बैठी हैं।

(ङ) रोगी के प्राण निकल गए।

(च) विभा की आँखों से आँसू टपक रहे हैं।

अध्याय–8 कारक

1. **(क)** (अ) कर्ताकारक, **(ख)** (स) करण कारक।
2. **कारक**—जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य में प्रयुक्त क्रिया से जोड़ते हैं, कारक कहलाते हैं।
3. **कारक के भेद**—हिन्दी में कारक के आठ भेद हैं—1. कर्त्ता कारक, 2. कर्मकारक, 3. करण कारक, 4. संप्रदान कारक, 5. अपादान कारक, 6. संबंध कारक, 7. अधिकरण कारक, 8. संबोधन कारक।
4. **करण कारक**—जिस कारक चिह्न से कर्त्ता द्वारा किए गये कार्य करने के साधन ज्ञात हों, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे—रमेश कार से जयपुर जा रहा है।

अपादान कारक—जिस विभक्ति चिह्न से संज्ञा या सर्वनाम से अलगाव या तुलना होने का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। जैसे—रूपा कृष्णा से लम्बी है।

5. (क) टेबल **पर** पुस्तकें किसने रखी हैं? (अधिकरण कारक)
(ख) **हे** ईश्वर ! ये आपने क्या कर दिया? (संबोधन कारक)
(ग) सुमन ने माँ **के लिए** साड़ी खरीदी। (संप्रदान कारक)
(घ) रोहन **का** बैग कहीं खो गया है। (संबंध कारक)
(ङ) मोहन **को** बहुत तेज बुखार है। (कर्म कारक)
(च) रवि कार होते हुए भी मेट्रो **से** ऑफिस जाता है। (करण कारक)
(छ) मुझ **से** यह काम नहीं हो पा रहा है। (करण कारक

6.

कारक	**विभक्ति चिह्न**
संप्रदान	को, के लिए
संबोधन	हे! अरे!
करण	से, के द्वारा
कर्त्ता	ने
सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने
अपादान	से
अधिकरण	पर, में

7. (क) [✗], (ख) [✓], (ग) [✓], (घ) [✓], (ङ) [✓]

8.

(क)	हे !	हे ! प्रभु रक्षा कीजिए।
(ख)	के लिए	सोहन रमेश के लिए पुस्तक लाया है।
(ग)	में	रोहित कक्षा छह में पढ़ता है।
(घ)	से	पेड़ से पत्ता झड़ गया ।
(ङ)	ने	राम ने रावण को मारा।
(च)	की	यह राम की कार है।
(छ)	को	पिता ने पुत्र को शाबाशी दी।

खेल-खेल में

कारक चिह्न	**सम्बन्धित कारक**
के	संबंध कारक
में	अधिकरण कारक
का	संबंध कारण
ने	कर्ता कारक
पर	अधिकरण कारक
से	अपादान कारक

अध्याय–9 सर्वनाम

1. सर्वनाम—संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—सचिन तेंदुलकर एकमात्र बल्लेबाज हैं **जिसने** सौ शतक मारे हैं। 2. टिफिन में पराँठे रख दिए हैं, **उन्हें** खा लेना।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम— यह मेरी पेंसिल है। वे मेरे दादा जी हैं। 'यह' तथा 'वे' शब्द किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत कर रहे हैं। अत: ये शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

अत: वे सर्वनाम शब्द, जो किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। इन्हें संकेतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम—कोई बाहर दरवाजे पर है। मेरी माँ किसी को भूखा नहीं सोने देती। 'कोई' तथा 'किसी' शब्द किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत कर रहे हैं। ये शब्द अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

अत: वे सर्वनाम शब्द जो किसी अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे—कुछ, कुछ-न-कुछ, कोई, किसी का, किसी को आदि।

3. कौन तथा किसको अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

वाक्य प्रयोग—1. बाहर दरवाजे पर कौन खड़ा है? 2. यह पुस्तक किसको देनी है?

4. **सर्वनाम के भेद**— हिन्दी में सर्वनाम के छ: प्रमुख भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निश्चयवाचक सर्वनाम, 3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 4. संबंधवाचक सर्वनाम, 5. प्रश्नवाचक सर्वनाम, 6. निजवाचक सर्वनाम।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भी तीन प्रकार हैं—उत्तम पुरुषबोधक, मध्यम पुरुषबोधक, अन्य पुरुषबोधक।

5.

सर्वनाम शब्द	**भेद**	**सर्वनाम शब्द**	**भेद**
(क) कौन	अनिश्चयवाचक	(ख) अपना	पुरुषवाचक
(ग) वह	संबंधवाचक	(घ) मेरा	पुरुषवाचक

6. (क) उसकी, (ख) किसकी, (ग) हमने, (घ) जिनको।

7. **(क) वह**

निश्चयवाचक— वह तो राम है।

पुरुषवाचक— राम पढ़ रहा है। वह अवश्य सफल होगा।

(ख) यह

निश्चयवाचक—यह मेरी घड़ी है।

पुरुषवाचक— पुस्तक अच्छी है। यह रोहन की है।

(ग) वे

निश्चयवाचक—वे आम खा रहे हैं।

पुरुषवाचक—आम रसीले हैं। वे पीले रंग के हैं।

8.

सर्वनाम शब्द	**भेद**
जो	संबंधवाचक
अपने-आप	निजवाचक
क्या	प्रश्नवाचक
बहुत कुछ	अनिश्चयवाचक
तुम्हारा	मध्यम पुरुष
वह	अन्य पुरुष वाचक

9.

(क) तुम्हें	राजेश तुम्हें बुला रहा है।
(ख) कोई	दरवाजे पर कोई खड़ा है।
(ग) किसी को	राजू किसी को दान दे रहा है।
(घ) जैसा-वैसा	जैसा करोगे, वैसा भरोगे।
(ङ) जिसने-उसे	जिसने पुस्तक दी उसने उसे पैसे दिए।
(च) कुछ न कुछ	जीवन में कुछ-न-कुछ करते रहना चाहिए।

10. (क) बर्तन में कुछ पड़ा है।
(ख) उसे यहाँ बुलाओ।
(ग) तुम कहाँ जा रहे हो ?
(घ) जो परिश्रम करेगा, वह इनाम पाएगा।
(ङ) हमारा घर मथुरा में है।

अध्याय–10 विशेषण

1. **(क)** (ब) सुंदर, **(ख)** (स) सैकड़ों।
2. **विशेषण**—जो शब्द किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के गुण, आकार, मात्रा अथवा संख्या की विशेषता बताते हैं; वे सभी विशेषण शब्द कहलाते हैं।
3. **विशेषण**—वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, **विशेषण** शब्द कहलाते हैं एवं जिन शब्दों की विशेषता बतायी जाती है, उन्हें **विशेष्य** कहते हैं।
4. **सर्वनाम**—संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे— वह, यह, ये, वे आदि। उदाहरण— 1. वह घूमने गया। 2. यह फल है। 3. ये गायिका हैं।
सार्वनामिक विशेषण—सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आकर उसकी विशेषता बताते हैं। जैसे— यह, वह, ये, वे आदि। उदाहरण— 1. वह लड़का घूमने गया। 2. यह फल मीठा है। 3. वे लड़कियाँ गायिका हैं।
5. **संख्यावाचक विशेषण**—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित संख्या का ज्ञान होता है। उदाहरण—1. वह दस पेंसिल चाहता है। (निश्चित संख्यावाचक) 2. वह मेले से बहुत सारी पुस्तकें खरीद लाया। (अनिश्चित संख्यावाचक)
परिमाणवाचक विशेषण—संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित/अनिश्चित नाप-तोल का ज्ञान होता है। उदाहरण—1. वह दस कुंतल गेहूँ गाड़ी पर ले गया। (निश्चित परिमाणवाचक)। 2. मेले का रास्ता कई किलोमीटर लम्बा है। (अनिश्चित परिमाणवाचक।)
6. (क) विशेषण शब्द — हरा-भरा भेद — गुणवाचक विशेषण
(ख) विशेषण शब्द — कुछ भेद — अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(ग) विशेषण शब्द — दो किलोग्राम भेद — निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(घ) विशेषण शब्द — सौ ग्राम भेद — निश्चित परिमाण वाचक विशेषण
(ङ) विशेषण शब्द — कई किलोमीटर भेद — अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
(च) विशेषण शब्द — बहुत-सा भेद — अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषण

7.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
ऊँची	दीवार	लाल	झंडा
दो	किताबें	बाहरी	हिस्सा
पढ़ाकू	बालक	खट्टा	नींबू
सुगंधित	पुष्प		

8.

	भेद	**वाक्य**
(क) कुछ	अनिश्चित संख्यावाचक	कुछ छात्र पढ़ रहे हैं।
(ख) प्रथम	निश्चित संख्यावाचक	राष्ट्रपति भारत का प्रथम नागरिक है।
(ग) थोड़े से	अनिश्चित संख्यायवाचक	थोड़े-से पक्षी उड़ रहे हैं।

(घ)	दयालु	गुणवाचक		भगवान परम दयालु हैं।
(ङ)	पर्याप्त	अनिश्चित परिमाणवाचक		उसके पास पर्याप्त दूध है।
(च)	पाँच लीटर	निश्चित परिमाणवाचक		सुनयना पाँच लीटर घी लाई।

9.

		उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
(क)	उच्च	उच्चतर	उच्चतम
(ख)	अधिक	अधिकतर	अधिकतम
(ग)	तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
(घ)	मधुर	मधुरतर	मधुरतम
(ङ)	सुंदर	सुंदरतर	सुंदतरतम
(च)	श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम

10.

(क)	बाग	हरा-भरा बाग	घना बाग
(ख)	पक्षी	सफेद पक्षी	काला पक्षी
(ग)	पहाड़	ऊँचा पहाड़	बर्फीला पहाड़
(घ)	धर्म	धार्मिक व्यक्ति	धर्म स्थल
(ङ)	संसार	संसारी लोग	सांसारिक व्यवहार
(च)	प्रस्ताव	प्रस्तावित कथन	प्रस्तावित योजना

11.

(क)	अर्थ	सरल अर्थ	(ख)	गाना	मधुर गाना
(ग)	किताब	मोटी किताब	(घ)	पीना	कड़वा पानी पीना
(ङ)	साल	हर साल	(च)	विज्ञान	भौतिक विज्ञान
(छ)	पालना	छोटा पालना	(छ)	अपना	अपना घर

12. (क) ऐतिहासिक (ख) अपराधी (ग) भीतरी (घ) भारतीय (ङ) यही

अध्याय–11 क्रिया

1. **(क)** (द) क्रिया, **(ख)** (स) अकर्मक क्रिया।
2. **क्रिया**— किसी कार्य के होने या किए जाने का संकेत देने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं। जैसे—बच्चे खेल रहे हैं।
3. **सकर्मक क्रिया**—
   जिस वाक्य में क्रिया का सीधा प्रभाव कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। आज हम सब घर को जाएँगे। बालिका ने फूलों की माला बनाई।
   यहाँ जाएँगे तथा बनाई का प्रभाव क्रमश: 'घर', 'फूलों की माला' पर पड़ रहा है। 'घर' तथा 'फूलों की माला' कर्म शब्द हैं।
   इन वाक्यों में क्रिया के साथ कर्म उपस्थित है। अत: ये सकर्मक क्रिया हैं। क्या अथवा किसको शब्दों से बने प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर मिलने पर वाक्य में सकर्मक क्रिया होती है।
4. **प्रेरणार्थक क्रिया**—जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से करवाये, तब वह क्रिया प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है। जैसे—रमेश ने मोहन से पत्र **लिखवाया**। रहीम ने करीम से श्याम को पुस्तक **दिलवाई**।
5. **नामधातु क्रिया**—जो क्रियाएँ संज्ञा या विशेषण शब्दों से बनती हैं, वे **नामधातु क्रिया** कहलाती हैं। जैसे— राम शरमाता है। सीता बहुत बतियाती है।

6. **पूर्वकालिक क्रिया के वाक्य—**(i) वह खाना खाकर सो गया।
(ii) वह खेलकर घर आ गया।
(iii) वह पढ़कर स्कूल चला गया।
7. **काल—**क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान प्राप्त हो, उसे काल कहते हैं। काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—
वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल।
8. भूतकाल—तनुजा ने कपड़े धो लिए।
वर्तमान काल—मंदिर में भक्त कीर्तन कर रहे हैं।
भविष्यत् काल—भुवनेश थोड़ी देर में विद्यालय जाएगा।
9.

	क्रिया रूप	**प्रत्यय**	**वाक्य**
(क)	पढ़	आई	राम पढ़ाई कर रहा है।
(ख)	गा	ता	वह गीत गाता है।
(ग)	लगा	या	मोहन ने शतक लगाया।
(घ)	चमक	ता	सूरज चमकता है।
(ङ)	सो	ता	रामू सोता है।
(च)	बरस	ता	बादल जोर से बरसता है।
(छ)	तैर	ता	शेर किस नदी में तैरता है।

10.

	कर्ता	**कर्म**	**क्रिया**
(क)	मोहन ने	हलवा	खाया
(ख)	मैं	विद्यालय	जाऊँगा
(ग)	हम सब	पेड़ पर	चढ़ गए
(घ)	गाय	घास	नहीं खा रही है
(ङ)	मुझसे	पत्र	लिखा नहीं जा रहा था
(च)	अपना	सामान नीचे	रख दीजिए।

11.

(क)	बरस रहा है।	सकर्मक क्रिया
(ख)	रहे हैं।	अकर्मक क्रिया
(ग)	गिर गया	सकर्मक क्रिया
(घ)	होती है	सकर्मक क्रिया
(ङ)	दी	सकर्मक क्रिया
(च)	करते हैं	सकर्मक क्रिया

12. (क) पढ़ना, (ख) भागना, (ग) झपकी, (घ) कूदना, (ङ) सींचा, (च) चिल्लाओ।
13. ठोकर-ठुकराना, लाठी-लठियाना, गरम-गरमाना, धक्का-धकियाना, फुसफुस-फुसफुसाना, जूता-जुतियाना, दौड़-दौड़ना, कूद-कूदना, लँगड़ा-लँगड़ाना, साठ-सठियाना, अपना-अपनाना, चक्कर-चकराना, हाथ-हथियाना, लात-लतियाना।
14. (क) बैठकर (ख) कूदा (ग) टकराई (घ) ले गए (ङ) पड़ेगी (च) दौड़ता, (छ) आ गए, (ज) होगी।
15. (क) चुका था-भूतकाल (ख) रहता है-वर्तमान काल (ग) होगी-भविष्यत काल (घ) रहा था-भूतकाल (ङ) गए हैं-वर्तमान काल (च) गिराए-भूतकाल।
16. (क) उसके हाथ से घड़ा गिर गया।
(ख) विराट ने पाँच गेंदों पर बीस रन बनाए।

(ग) लड़के का सारा दही फैल गया।
(घ) मुझे वहाँ नहीं जाना है।
(ङ) चन्द्रमा सदा रात को चमकता है।
(च) हम यह दूध नहीं पियेंगे।
(छ) वह अगले सोमवार को घर जाएगा।

17. (क) वर्तमान काल – चौकीदार घर जा रहा है।
भविष्यकाल – चौकीदार घर जाएगा।
(ख) भूतकाल – बच्चे आम खा रहे थे।
भविष्यकाल – बच्चे आम खाएँगे।
(ग) वर्तमान काल – शुभम पत्र लिख रहा है।
भूतकाल – शुभम पत्र लिख रहा था।

अध्याय–12 अव्यय

1. **(क)** (अ) चार, **(ख)** (अ) निकट
2. **अव्यय**—जिन शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारक आदि के साथ नहीं बदलते, उनको अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता है।
3. **अव्यय के भेद**—अव्यय के चार भेद हैं— क्रिया विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चय बोधक, विस्मयादिबोधक।
4. **क्रिया विशेषण**—जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।
5. **कालवाचक क्रिया विशेषण**—जो अव्यय शब्द क्रिया के होने का काल (समय) बताते हैं, उनको कालवाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है।
6. **अंतर**—वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं, विशेषण कहे जाते हैं, जबकि जो अव्यय शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।
7. **संबंधबोधक अव्यय**—जो अव्यय शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों से संबंध बताते हैं, उनको संबंधबोधक अव्यय कहा जाता है। उदाहरण—विद्यालय के सामने सुंदर वाटिका है। 'के सामने' शब्द संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के किसी अन्य शब्द से जोड़ रहे हैं। ऐसे शब्दों को संबंधबोधक कहा जाता है।
8. (क) धीरे से – रीतिवाचक क्रिया विशेषण
(ख) कब – कालवाचक क्रिया विशेषण
(ग) अचानक – रीतिवाचक क्रिया विशेषण
(घ) बहुत – परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
(ङ) प्रतिदिन – कालवाचक क्रिया विशेषण
(च) पास – स्थानवाचक क्रिया विशेषण
9. (क) नियमपूर्वक (ख) कम (ग) इधर-उधर (घ) भीतर (ङ) परसों
10. (क) छत से (ख) पकड़ कर (ग) दो घंटे (घ) ऊपर (ङ) के पास (च) के मारे (छ) जितना उतना।
11. (क) राम **और** भरत राजा दशरथ के पुत्र थे।
(ख) वह प्रथम आया, **क्योंकि** वह तेज दौड़ा।
(ग) मेरा घूमने का मन है **परंतु** कल परीक्षा है।

(घ) आज लगातार बारिश हो रही है **इसलिए** विद्यालय का अवकाश है।
(ङ) कार **अथवा** ट्रक ही इस रास्ते पर चलते हैं।
(च) हमने बहुत मेहनत की **अत:** हमें सफलता मिलेगी।
(छ) सुयश ने बहुत समझाया **लेकिन** नीरा नहीं मानी।

12. (क) हाय! यह क्या हो गया?
(ख) अरे! तुम गए नहीं।
(ग) छि:! कितनी गंदगी फैलाई हुई है तुमने।
(घ) अहा! यह तो बहुत स्वादिष्ट है।
(ङ) वाह! क्या सुंदर दृश्य है।
(च) ओह! मैं भूल गया।
(छ) बचो! आगे से कार आ रही है।

13. (क) शोक (ख) पीड़ा (ग) भय (घ) आश्चर्य (ङ) आशीर्वाद (च) चेतावनी (छ) घृणा (ज) स्वीकृति।

अध्याय–13 विराम चिह्न

1. **(क)** (द) रूकना, **(ख)** (स) –

2.

(क)	‘‘ ’’	दुहरा उद्धरण चिह्न	(घ)	–	योजक चिह्न
(ख)	?	प्रश्नवाचक चिह्न	(ङ)	‘ ’	एकल उद्धरण चिह्न
(ग)	०	लाघव चिह्न	(च)	!	विस्मयादिक बोधक चिह्न
(छ)	।	पूर्ण विराम	(ज)	,	अल्प विराम

3. प्रतीक – अरे उत्कर्ष ! कल जब गुरु जी व्यायाम के बारे में बता रहे थे तो तुम वहाँ पर थे?
उत्कर्ष – हाँ मित्र ! मैं वहीं पर था।
प्रतीक – तुम्हें क्या समझ में आया?
उत्कर्ष – यही कि स्वस्थ एवं नीरोग रहने के लिए व्यायाम अति आवश्यक है।
प्रतीक – सही कहा तुमने! मैंने तो गुरु जी के निर्देशानुसार व्यायाम करना शुरू भी कर दिया है।
उत्कर्ष – मैं भी जल्दी ही शुरू करने वाला हूँ।
प्रतीक – शुभ काम करने में देरी मत करो। कल से ही शुरू कर दो।
उत्कर्ष – ठीक कहते हो प्रतीक! मैं कल से ही शुरू कर देता हूँ।
प्रतीक – शुरुआत में अधिक कसरत मत करना, नहीं तो शरीर में दर्द हो सकता है।
उत्कर्ष – नहीं, जैसा गुरु जी ने बताया है, वैसा ही करूँगा। शुरू में कम बाद में अधिक कसरत करूँगा।

4. (क) आप सब उस ओर क्यों जा रहे हैं?
(ख) शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।
(ग) तुलसीदास ने लिखा, ‘‘पराधीन सपनेहु सुख नाहीं’’।
(घ) रोहन ने कहा– मोहन को अपना मित्र बना लो।
(ङ) पं० जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।

खेल-खेल में

राजा दिनभर अकाल पीड़ितों की सहायता करता और राज्य कर्मचारियों के आचरण का पता भी रखता था। एक दिन उसने एक अधिकारी को बुलाया और पूछा—"तुम कितने समय तक कार्य करते हो? मुझे तुम्हारे बारे में सूचना मिली है कि तुम लोगों से सहायता के बदले पैसा लेते हो। अवश्य ही तुम्हारा यह आचरण निंदा योग्य है। तुम्हें उचित दंड मिलेगा।"

अध्याय–14 वाक्य–विचार

1. दो या दो से अधिक शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं।

2. प्रयोग के आधार पर वाक्य के दो प्रमुख भेद हैं—

(1) अर्थ के आधार पर—विधानवाचक वाक्य, निषेधवाचक वाक्य या नकारात्मक वाक्य, प्रश्नवाचक वाक्य, इच्छावाचक वाक्य, संकेतवाचक वाक्य, संदेहवाचक वाक्य, आज्ञावाचक वाक्य, विस्मयवाचक वाक्य।

(2) संरचना या बनावट के आधार पर—सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य, मिश्र वाक्य।

3. प्रयोग के आधार पर वाक्य के दो अंग हैं— (क) उद्देश्य (ख) विधेय

4. **संयुक्त वाक्य**—वह वाक्य जिसमें दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, किन्तु, परन्तु, तो, नहीं, लेकिन, पर इत्यादि) द्वारा जुड़े हों, संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

मिश्र वाक्य—वह वाक्य जिसमें एक वाक्य प्रधान और दूसरा वाक्य आश्रित या गौण हो, मिश्र वाक्य कहलाता है।

5. (क) उद्देश्य — आदिमानव — विधेय — अपनी रक्षा के लिए गुफाओं में रहते थे।
(ख) उद्देश्य — राम — विधेय — भला रावण से हार मानने वाले थे।
(ग) उद्देश्य — पत्रकार के — विधेय — प्रश्न का क्या आपके पास कोई जवाब नहीं है?
(घ) उद्देश्य — हामिद ने — विधेय — चिमटा लिया और कंधे पर रख लिया।

6. (क) तथा (ख) या (ग) अथवा (घ) परंतु

7. (क) वह प्रदर्शनी देखने जा रहा है।
(ख) प्लेटफॉर्म पर चहल-पहल हो रही है।
(ग) पुलिस ने चोर को रँगे हाथ पकड़ लिया।
(घ) बंदर बच्चे के हाथ से मिठाई ले गया।
(ङ) मैं और प्रिया पिताजी के साथ बाजार जाएँगे।

8. (क) रोहित मेरे लिए चॉकलेट लाया।
(ख) चिड़िया उड़ी और वृक्ष पर जा बैठी।
(ग) सारिका परिश्रमी छात्रा है इसलिए उसे पुरस्कार मिला।
(घ) यह वही लड़का है जो कल पार्क में खेल रहा था।

9.

उद्देश्य	**विधेय**
कबूतर	दाना चुग रहे थे।
प्रधानाचार्य ने	आज विद्यालय में छुट्टी कर दी।
सभी किसान	खेतों को जोत रहे हैं।
वह ट्रेन	इलाहाबाद जाएगी
माँ	कपड़े धो रही है
सूरज	निकल आया है।

अध्याय–15 वाक्य–शुद्धधि

1. वाक्य रचना करते समय पदक्रम संबंधी तथा लिंग, वचन, कारक आदि की अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

2. वाक्य में उचित क्रम इस प्रकार हैं– कर्ता, कर्म और क्रिया।

3. लिंग संबंधी अशुद्धि– शोभना जी कुशल अध्यापक हैं।

वचन संबंधी अशुद्धि– पाँच और पाँच दस होता है।

कारक संबंधी अशुद्धि– वह खाने को खाता है।

4. (क) उसे इस बात से क्या लेना-देना है।

(ख) वह पानी पी रहा है।

(ग) भूखे साधु ने भोजन करके मुझे आशीर्वाद दिया।

(घ) यह गलत काम नहीं करें।

(ङ) ये लोग कहाँ से आए हैं?

अध्याय–16 शब्द संग्रह

1. **(क)** (द) अनल, **(ख)** (स) व्यय, **(ग)** (ब) तीर, **(घ)** (अ) अमर, **(ङ)** (अ) दिवस-गरीब।

2. समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। जैसे– नदी, सरिता, वाहिनी, तटिनी।

3. समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची कहा जाता है, जबकि जिन शब्दों के अर्थ एक से अधिक होते हैं, उन्हें अनेकार्थक शब्द कहा जाता है।

4. किसी शब्द का विपरीत या उल्टा अर्थ देने वाला शब्द विलोम शब्द कहलाता है। जैसे– राजा-रंक, दिन-रात, बड़ा-छोटा।

5. सुत और सूत श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द हैं।

6. गाड़ी चलाने वाला व्यक्ति-चालक

7. कुल – जोड़, वंश, (झंडा)
मित्र – दोस्त, (सेना), सखा
पद – चरण, (देह), ओहदा
घट – (घाट), कम, हृदय
वर – (ईश्वर), वरदान, दूल्हा
नग – पर्वत, (बादल), सूर्य
धन – हथौड़ा, विष्णु, (बादल)
पानी – जल, सम्मान, (धतूरा)
कर – हाथ, सूँड, (कसम)
हरि – बंदर, (हाथी), विष्णु

8. पत्र – पत्ता

फल – नतीजा

धन – हथौड़ा

घट — कम

गुण — स्वभाव

कनक — धतूरा

चपला — लक्ष्मी

अज — बकरा

9.

	शब्द	अर्थ	वाक्य
(क)	अक्षर	वर्ण	अन्वी सुन्दर अक्षर लिखती है।
		ब्रह्म	परमात्मा को अक्षर भी कहते हैं।
(ख)	पत्र	पत्ता	पेड़ से पत्र गिर रहे हैं।
		चिट्ठी	राहुल ने कक्षाध्यापक को प्रार्थना-पत्र लिखा।
(ग)	मंगल	शुभ	प्रात:काल ईश्वर-स्मरण मंगलदायक है।
		सप्ताह का दिन	कल मंगलवार को मैं जयपुर जाऊँगा।
(घ)	कुल	वंश	महाराणा प्रताप वीर कुल में पैदा हुए थे।
		जोड़	हिसाब कुल कितना हुआ ?

10. (क) निरोगी (ख) नया (ग) उजाला (घ) शिष्यों (ङ) कायर (च) उत्तीर्ण

11. (क) कामचोर (ख) वक्ता (ग) निरंकुश (घ) पशुपालक (ङ) नभचर (च) रसोईघर (छ) देवालय

12. (क) चिर – पुराना –यह भवन चिरकाल से है।
चीर – वस्त्र – साधु का चीर पुराना हो गया है।
(ख) पास – निकट – मथुरा के पास यमुना नदी बहती है।
पाश – जाल – कबूतर शिकारी के पाश में फँस गए।
(ग) परिणाम – नतीजा – वह बहुत तेज दौड़ा, परिणाम में श्रेष्ठ धावक का पुरस्कार जीता।
परिमाण – मात्रा – अनेक बाढ़ पीड़ितों के लिए भोजन का यह परिमाण बहुत कम है।
(घ) प्रसाद – भगवान का भोग – पुजारी ने सबको प्रसाद बाँटा।
प्रासाद – महल – राज प्रासाद में स्वयंवर आयोजित हुआ।

13. (क) चित्रकार (ख) परोपकारी (ग) अनंत (घ) दृष्टिहीन।

● ***खेल-खेल में***

छात्र स्वयं करें।

अध्याय–17 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

1. **(क)** (द) इन्कार करना, **(ख)** (द) कोरा बाहरी दिखावा।

2. **मुहावरा–** वह वाक्यांश जो सामान्य अर्थ से भिन्न विशिष्ट अर्थ दे, मुहावरा कहलाता है।

3. **लोकोक्ति—** वे वाक्य या वाक्यांश जो लोगों द्वारा विशेष अर्थ में प्रयुक्त किये जाते हैं, लोकोक्तियाँ कहलाते हैं।

4. 1. मुहावरे भाषा के प्रभाव को बढ़ाते हैं। उन्हें अर्थवान बनाते हैं।

2. मुहावरे सामान्य से विशिष्ट अर्थ देते हैं, जिससे भाषा रोचक एवं सशक्त बनती है।

3. मुहावरों को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

4. मुहावरे वाक्य नहीं अपितु वाक्यांश होते हैं।

5. मुहावरों का कभी स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।

लोकोक्ति का अर्थ है—लोक + उक्ति = आम लोगों द्वारा बोली जाने वाली बातचीत।

लोकोक्तियाँ अपने आप में पूर्ण वाक्य होते हैं। इनमें भी मुहावरों की भाँति परिवर्तन नहीं होता है। इनका प्रयोग शिक्षाप्रद उद्‌देश्य से किया जाता है।

5.

मुहावरा	**लोकोक्तियाँ**
आँखों का तारा।	थोथा चना बाजे घना।
अक्ल चकराना।	जैसी करनी वैसी भरी।
दाल न गलना।	आ बैल मुझे मार।
घी के दीपक जलाना।	अक्ल बड़ी या भैंस।
मक्खियाँ मारना।	नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

6. (क) **मुँह ताकना** (उम्मीद रखना)— भिखारी घर के सामने खड़ा होकर मकान मालिक का मुँह ताक रहा था।

(ख) **मुँह की खाना** (पराजित होना)—मोहन ने पहलवानी में रमेश से कई बार मुँह की खाई है।

(ग) **पानी-पानी होना** (लज्जित होना)—रामू के असभ्य व्यवहार से उसका पिता पानी-पानी हो गया।

(घ) **पीठ दिखाना** (हारकर भाग जाना)—दुश्मन को पीठ दिखाकर भागने की अपेक्षा वहीं मर जाना कहीं अच्छा है।

(ङ) **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (संकट को जड़ से समाप्त कर देना)—स्मार्ट फोन ने बच्चों को बीमार करना शुरू कर दिया है। इससे अच्छा है कि घर पर साधारण फोन ही रखें। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(च) **कंगाली में आटा गीला** (संकट पर संकट आना)—घर में वैसे ही अभाव थे और ऊपर से मेहमान और टपक पड़े। ऐसे में कंगाली में आटा गीला होगा ही।

(छ) **मान न मान मैं तेरा मेहमान** (जबरदस्ती गले पड़ना)—घर आकर मुझसे विशेष आत्मीयता दिखाने लगा तो मुझे कहना ही पड़ा—यह तो मान न मान मैं तेरा मेहमान वाली बात हो गयी।

(ज) **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिवान ही विजयी होता है)—कैसा समय आ गया है, चारों ओर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

7. (क) **थोथा चना बाजे घना** (गुण कम, दिखावा अधिक)—तीन बार का हाईस्कूल फेल सुभम इण्टर के छात्रों को पढ़ाने की बात करने लगा तो सबने कहा—थोथा चना बाजे घना।

(ख) **आँखें खुलना** (वास्तविकता का पता चलना)—मोहल्ले के लोगों ने राजू की असलियत बताई तो उसके पिता की आँखें खुल गईं।

(ग) **आपे से बाहर होना** (क्रोधित होना) — गिरीश की लापरवाही देखकर उसके पिता आपे से बाहर हो गये।

(घ) **चोर की दाढ़ी में तिनका** (संदिग्ध व्यक्ति का व्यवहार संदिग्ध होता है)—पुस्तक रवि ने चुराई इसीलिए वह कई दिनों तक विद्यालय नहीं आया। सबने कहा-चोर की दाढ़ी में तिनका।

(ङ) **साँप मरे, न लाठी टूटे** (बिना कुछ गँवाए काम का होना)—मैं सोहन को सबक सिखाना चाहता हूँ, परन्तु मेरा नाम नहीं आना चाहिए, कुछ ऐसा हो कि साँप मरे न लाठी टूटे।

(च) **अंधे की लकड़ी होना** (एकमात्र सहारा)—विधवा माँ के लिए उसका इकलौता पुत्र अंधे की लकड़ी के जैसा है।

8.

(क)	फूला न समाना	अत्यधिक प्रसन्न होना
(ख)	एक पंथ दो काज	दोहरा लाभ
(ग)	नाच न जाने आँगन टेढ़ा	स्वयं की कमी को दूसरे पर मढ़ना
(घ)	उल्लू बनाना	मूर्ख बनना
(ङ)	खोदा पहाड़ निकली चुहिया	मेहनत ज्यादा फल कम
(च)	ऊँची दुकान फीका पकवान	नाम बड़ा काम छोटा
(छ)	नौ दो ग्यारह होना	भाग जाना

9. 1. **आँखों से गिर जाना** (सम्मान खो देना)- जिस दिन से गिरीश चोरी में पकड़ा गया है, वह सभी की आँखों से गिर गया है ।

2. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना) — मुन्ना अपनी प्रशंसा आप ही करता रहता है । एक दिन वीनू ने कहा कि अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना अच्छा नहीं है ।

3. **आँखें चार होना** (एक-दूसरे को देखना)— ज्यों ही सलीम की अनारकली से आँखें चार हुईं, वह अपनी सुध-बुध खो बैठा।

4. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत शोर या उपद्रव करना)— अध्यापक के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

5. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)— मैं तुम्हारी असलियत जान गया हूँ, अब तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते हो।

6. **आँखों का तारा होना** (बहुत प्रिय होना)— आजकल ब्रजेश अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से माँ-बाप की आँखों का तारा बना हुआ है।

7. **अँगूठा दिखाना** (निर्धारित समय पर इंकार करना)— महिला ने पड़ोसिन को ऐन वक्त पर रुपया देने के नाम पर अँगूठा दिखा दिया।

8. **आँखें बिछाना** (अति उत्साह से स्वागत करना)— विवेकानन्द के (शिकागो) अमेरिका से लौटने पर देशवासियों ने उनके स्वागत में आँखें बिछा दीं ।

9. **आँखों में खून उतरना** (अत्यधिक क्रोध आना)— शत्रु को देखते ही उसकी आँखों में खून उतर आया ।

10. **अँगुली पर नचाना** (इशारे पर कार्य कराना)— शक्तिशाली लोग शक्तिहीनों को अँगुली पर नचा रहे हैं ।

11. **अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना** (थोड़ा मिलने पर धीरे-धीरे सम्पूर्ण पर अधिकार कर लेना)—बच्चों को इतना मुँह न लगाना चाहिए नहीं तो वे अँगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ लेंगे ।

12. **एड़ी-चोटी का पसीना एक करना** (बहुत मेहनत करना)— निर्धन व्यक्ति परिवार की उन्नति के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं ।

13. **कान में तेल डालना** (किसी की बात न सुनना)—मैंने तुमसे कितना कहा कि परिश्रम करो, किन्तु तुमने कान में तेल डाल रखा था।

14. **गाल बजाना** (बढ़-चढ़कर बातें करना)—भाई, तुम काम कम करते हो, गाल अधिक बजाते हो ।

● *खेल-खेल में—*

1. आँखों का तारा होना।
2. ईद का चाँद होना।
3. अँगूठा दिखाना।
4. श्रवण कुमार होना या अंधे की लाठी।

अध्याय–18 अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

(क) 1. (क) उचित शीर्षक—अनुशासन का महत्व।

(ख) दैनिक कार्य, व्यवहार में अनुशासन को अपनाने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है।

(ग) सारांश—मानव जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है। अनुशासन अपनाने वाले व्यक्ति में अनेक सद्‌गुण स्वयं ही आ जाते हैं। इन सद्‌गुणों और उच्च आदर्शों के बल पर अनुशासित व्यक्ति अपना जीवन सुखी व सफल बना लेता है।

2. (क) उचित शीर्षक — वीरभूमि राजस्थान।

(ख) यहाँ समय-समय पर ऐसे वीर पैदा हुए हैं, जिन्होंने अपने रक्त से राजस्थान का गौरव बढ़ाया है। यहाँ पैदा हुए वीर पुरुषों की एक लंबी शृंखला है, जिन्होंने जन्मभूमि की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर किए हैं, इसलिए राजस्थान को वीरों की भूमि कहा जाता है।

(ग) सारांश—राजस्थान की मरुभूमि को वीरों की भूमि कहा जाता है, यहाँ राणा प्रताप जैसे अनेक वीर पैदा हुए हैं जिन्होंने घास की रोटियाँ खाईं, जंगल-जंगल भटके, धरती पर सोए लेकिन जन्मभूमि की स्वाधीनता की रक्षा की। यहाँ पन्ना धाय तथा पदमिनी जैसी महान महिलाएँ हुईं, जिन्होंने राजस्थानी शौर्य में चार चाँद लगाए।

3. (क) उचित शीर्षक—सफलता का मूल मंत्र।

(ख) जो काम करना हो, उसे एकाग्रता तथा आत्मीयता से करें, यही जीवन में सफल होने का मूल मंत्र है।

(ग) सारांश—रुचिपूर्वक और एकाग्रता के साथ किया गया कार्य सफलता दिलाता है। कार्य की योजना बनाकर, नियमित दिनचर्या अपनाकर सफलता प्राप्त होती है तथा असफलता के कष्ट से बचा जा सकता है।

4. (क) उचित शीर्षक—स्वस्थ मनोरंजन।

(ख) जो लोग मनोरंजन को बच्चों की चीज मानकर इससे दूर हो जाते हैं, वे मानसिक रोगों के शिकार हो जाते हैं।

(ग) स्वस्थ मनोरंजन से जीवन में प्रसन्नता और उमंग आती है। नष्ट हुई शक्ति प्राप्त होती है और कार्य के लिए उत्साह जगता है। जो लोग मनोरंजन से दूर रहते हैं, वे अनेक रोगों का शिकार होकर जीवन के आनंद से वंचित हो जाते हैं।

(ख) 1. (क) उचित शीर्षक—नदी और मनुष्य।

(ख) मनुष्य को भले-बुरे की पहचान है, वह ज्ञान से संपन्न है, जबकि नदी ज्ञान-शून्य है, उसे अच्छे-बुरे की पहचान नहीं है।

(ग) गर्मी में नदी सूखकर एक पतली धारा जैसी दिखाई देती है। यही नहीं बरसात में भरकर इठलाती, उफनती किनारों को काटते हुए उमग कर बहती है।

2. (क) उचित शीर्षक—मानवता।

(ख) कवि को अपनी मानवता पर बहुत अभिमान है।

(ग) कवि हमको सिखाना चाहता है कि जितना हो सके संसार में तुम्हें प्यार बाँटना चाहिए। तुम स्वयं भी अच्छे से जियो और अन्य को भी जीने दो।

3. (क) उचित शीर्षक—ईश्वर के विभिन्न रूप।

(ख) कवि ने ईश्वर के बारे में अपने बुजुर्गों, अनेक लोगों तथा किताबों से जाना है। कवि ने यह जाना है कि हम सब ईश्वर के ही रूप हैं। हमें आपस में प्यार से रहना चाहिए।

(ग) कवि के अनुसार सभी मनुष्यों में भाई-भाई का नाता है क्योंकि सभी ईश्वर के रूप या अंश हैं।

4. (क) उचित शीर्षक—परोपकारी वृक्ष।

(ख) वृक्ष हमें आश्रय, फल-फूल, लकड़ी, औषधि देते हैं, वृक्षों से ही वर्षा होती है, वृक्ष शुद्ध वायु देते हैं, जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं, अतः वृक्ष हमारे मित्र हैं।

(ग) कवि हमसे कह रहा है कि हमें वृक्षारोपण करना चाहिए, वृक्षों की देखभाल करनी चाहिए तथा इन्हें कटने से बचाना चाहिए।

5. (क) उचित शीर्षक—मिट्टी की अजेयता अथवा मातृभूमि।

(ख) प्रलय से मिट्टी भी नहीं हटती है।

(ग) चक्रवर्ती सम्राटों और जगत को जीतने वालों को मिट्टी ही जन्म देती है।

अध्याय–19 मौखिक अभिव्यक्ति

1. सियार और कौआ

एक जंगल में एक कौआ रहता था। एक दिन कौआ किसी छोटे बालक के हाथ से रोटी छीनकर उड़ गया और एक पेड़ पर बैठ गया। उस पेड़ के नीचे से एक सियार जा रहा था। सियार पशुओं में और कौआ पक्षियों में चालाक माना जाता है। सियार भूखा था, सियार कौए से रोटी प्राप्त करने की तरकीब सोचने लगा। सियार ने कौए को नमस्ते कहा और उसके रूप, रंग और बोली की झूठी बड़ाई करने लगा। कौआ अपनी प्रशंसा सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सियार को

धन्यवाद कहा। धन्यवाद कहने के लिए जैसे ही कौए ने अपना मुँह खोला, रोटी उसकी चोंच से नीचे गिर गई। सियार रोटी मुँह में दबाकर भाग गया। भूखा कौआ उसे देखता रह गया।

2. बहन – भाई, इतने खिलौने कहाँ से ला रहे हो?

भाई–बहन मैं मेला देखने गया था, वहाँ से लाया हूँ।

बहन–कौन से मेले में गये थे?

भाई–गाँधी मैदान में दशहरा के मेले में गया था।

बहन–आपने वहाँ क्या-क्या देखा?

भाई–मैंने वहाँ सरकस देखा, जादू का खेल देखा और भालू का नाच भी देखा था।

बहन–क्या आपने झूला भी झूला था?

हाँ–हाँ, मैंने झूला भी झूला था।

बहन–भाई, मेले के बारे में और बताओ?

भाई–मेले में बहुत भीड़ थी। अनेक दुकानें लगी थीं। कई प्रकार के झूले थे। रंग-बिरंगे गुब्बारे, खिलौने और मिठाइयाँ बिक रही थीं।

बहन–मुझे भी मेला देखने जाना है।

भाई–अवश्य। कल मम्मी-पापा के साथ चलेंगे।

3. छात्र स्वयं करें।

अध्याय–20 सड़क सुरक्षा एवं परिवेशीय सजगता

1. 'सड़क सुरक्षा' सुरक्षित यातायात से सम्बन्धित एक उपाय है जिसमें सड़क दुर्घटना में लोगों को चोट लगने और उससे मौत होने आदि घटनाओं को कम करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु यातायात के विभिन्न नियमों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है ताकि यातायात सर्वाधिक सुरिक्षत हो। परिवहन हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। ऐसी दशा में 'सड़क सुरक्षा' से सम्बन्धित नियमों का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य है।
2. (क) पैदल चलते समय हमें सड़क के फुटपाथ पर चलना चाहिए।

   (ख) सड़क पार करते समय हमें ट्रैफिक लाइट में लाल बत्ती होने पर जेब्रा क्रॉसिंग से सड़क पार करनी चाहिए।
3. ट्रैफिक लाइट में पीली, लाल तथा हरी रंग की तीन बत्तियाँ होती हैं। पीली बत्ती लाल बत्ती के होने का संकेत देती है। लाल बत्ती होने पर वाहन रोकना पड़ता है। हरी बत्ती चालक को आगे बढ़ने का संकेत देती है।
4. सड़क पर बनी सफेद और काली धारी वाली पट्टियाँ को 'जेब्रा क्रॉसिंग' कहते हैं। इसके ऊपर से पैदल यात्री सड़क पार करते हैं।
5. 'सड़क की भाषा' से आशय यातायात के नियमों का ज्ञान होने से है। सड़क पर अनेक संकेतक चिह्न बने होते हैं। हमें उनके बारे में जानकारी होनी चाहिए, तभी हम सुरक्षित यात्रा कर सकते हैं।
6. सीट बेल्ट दुर्घटना की स्थिति में वाहन चालक एवं सवारी को आगे की टक्कर होने से रोकती है। यह वाहन चालक व सवार सभी व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।

7. (क) 101 पर। (ख) 108 पर। (ग) 100 पर। (घ) हमें पुलिस और एंबुलेंस को सूचना देनी चाहिए तथा घायलों की प्राथमिक चिकित्सा करनी चाहिए।
8. (क) ट्रैफिक लाइट पर खड़े रहकर इंजन न बंद करने से ईंधन की खपत बढ़ती है तथा वायु प्रदूषण भी होता है।
   (ख) आगे की गाड़ी व अपनी गाड़ी के बीच एक गाड़ी की दूरी रखनी चाहिए।
9. गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन पर बातें करने से चालक का ध्यान बातों की ओर चला जाता है। फलत: वाहन से नियंत्रण हटते ही प्राय: दुर्घटना हो जाती है। अत: वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें नहीं करनी चाहिए।
10. मुझे अपने दादाजी और विषय अध्यापक महोदय से यह जानकारी मिली कि सड़क चिह्न पूरी दुनिया में एक जैसे होते हैं। इनके द्वारा मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि विभिन्न देशों में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं। ये भाषाएँ प्राय: वाहन चालकों को समझ में नहीं आतीं। दूसरे शब्दों में सड़क के नियमों को समझने में भाषाई विभिन्नता रूकावट बन जाती है। इसी कारण सड़क के नियमों को संकेत रूप में समझाने के लिए पूरे विश्व में सड़क चिह्न एक जैसे होते हैं।
11. पैदल यात्रा परिपथ को जेब्रा क्रासिंग इसलिए कहते हैं क्योंकि सड़क पर जिस जगह यह क्रासिंग होती है वहाँ वैसी ही क्षैतिज धारीदार पट्टियाँ बनी होती हैं जैसी जेब्रा पशु के शरीर पर बनी होती हैं। इस प्रकार जेब्रा क्रासिंग का आशय धारीदार पट्टियों से होता है।
12. विद्यालय जाते सयम और घर वापस आते समय हम सड़क के जिन चिह्नों को देखते हैं उनमें से कुछ के अर्थ निम्न हैं—
    (i) आगे मोड़ है। (ii) प्रवेश निषेध। (iii) हॉर्न प्रतिबंधित। (iv) आगे विद्यालय है। (v) पैदल यात्रा प्रतिबंधित है। (vi) गति अवरोधक। (vii) गति सीमा। (viii) यू-टर्न निषेध (ix) ओवरटेक निषेध।
13. हमें यातायात के निम्नलिखित नियमों का पालन करना चाहिए—
    1. हमें सदैव सड़क पर बायीं ओर ही चलना चाहिए।
    2. पैदल चलने की दशा में सड़क हमेशा जेब्रा क्रासिंग से ही पार करनी चाहिए।
    3. सड़क संकेतों एवं चिह्नों को देखकर उनके द्वारा दिए गए सांकेतिक निर्देशों का सावधानीपूर्वक पालन करना चाहिए।
    4. दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट अवश्य लगाना चाहिए।
    5. चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट अवश्य बाँधनी चाहिए। बाहनों को निश्चित किए गए स्थान पर ही पार्क (खड़ा) करना चाहिए।
14. सड़क पार करते समय हमें सर्वप्रथम दाएँ-बाएँ यह देखना चाहिए कि कहीं कोई वाहन तो नहीं आ रहा है। इसके बाद सड़क के विभिन्न संकेत चिह्नों को देखकर सावधानीपूर्वक सड़क पार करनी चाहिए। पैदल होने पर जेब्रा क्रासिंग से ही सड़क पार करनी चाहिए।
15. 1. जब हम पैदल हों तो ध्यानपूर्वक चलना चाहिए। सामने से आ रहे यातायात पर नजर रखनी चाहिए। जहाँ ड्राइवर नहीं देख पाए वहाँ सड़क पार करने से बचना चाहिए।
    2. डिवाइडर अथवा रेलिंग्स के ऊपर से कभी नहीं कूदना चाहिए।
    3. यदि हम साइकिल से यात्रा कर रहे हों तो साइकिल पर क्षमता से अधिक भार नहीं लादना चाहिए। यदि सड़क पर साइकिल मार्ग हो तो केवल उसका ही उपयोग करना चाहिए अथवा हमेशा बायीं ओर चलना चाहिए।

4. सड़क पर मुड़ते समय यातायात पर दृष्टि डालनी चाहिए एवं हाथ से मुड़ने वाली दिशा में संकेत करना चाहिए।

5. यदि हम बस से विद्यालय जा रहे हों तो शरीर का कोई भी अंग खिड़की से बाहर नहीं निकालना चाहिए। शोरगुल कदापि नहीं करना चाहिए। इससे चालक का ध्यान बँटता है और दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है।

16. त्रिभुजाकार चिह्न	वर्णन
	यह चिह्न वाहन को सावधानी से चलाने की चेतावनी देता है और यह दर्शाता है कि आगे थोड़ी दूरी पर स्कूल है। अत: गति धीमी रखें।
	यह चिह्न दर्शाता है कि आगे जेब्रा क्रासिंग है, पदयात्री सड़क पार करते हैं। अत: वाहन की गति नियंत्रित करें।

17. 1. प्रवेश निषेध, 2. हॉर्न प्रतिबंधित, 3. आगे विद्यालय है, 4. पैदल यात्रा प्रतिबंधित, 5. गति अवरोधक, 6. गति सीमा।

18. विद्यालय में जल का दुरुपयोग करने वाले छात्रों को हम समझायेंगे कि उन्हें जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि जल ही जीवन है। जल का सदुपयोग करना चाहिए। टंकी के नलों को खुला छोड़कर जल व्यर्थ में फैलाना नहीं चाहिए। क्योंकि कल पानी नहीं रहेगा तो हमारा जीवन संकट में पड़ जायेगा। हमारे दैनिक कार्य नहीं हो सकेंगे।

19. घर के पास गंदा पानी एकत्रित होने से मच्छरों का आतंक बढ़ जाएगा। क्योंकि मच्छर पानी में ही अण्डे देते हैं। ऐसी दशा में मलेरिया एवं डेंगू बुखार होने की सम्भावना अत्यधिक बढ़ जायगी क्योंकि ये दोनों रोग मच्छरों के काटने से ही होते हैं। इसके निदान हेतु हम दो तरह का उपाय करेंगे—

1. एकत्रित गंदे जल में मिट्टी का तेल डाल देंगे ताकि उसमें पनप रहे मच्छर नष्ट हो जाएँ।

2. गंदे पानी की उचित निकासी के लिए अभिभावकों की मदद से सम्बन्धित व्यक्ति / विभाग से बात करेंगे।

20. हमें खाना खाने से पहले हाथ को साबुन से अच्छी तरह धोने के लिए इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब हम काम कर रहे होते हैं तो हमारा हाथ अलग-अलग वस्तुओं, स्थानों आदि पर पहुँचता है। इन वस्तुओं, स्थानों पर विद्यमान विभिन्न प्रकार के हानिकारक जीव हमारे हाथों में चिपक जाते हैं। ये शरीर के अन्दर पहुँचकर घातक नुकसान पहुँचा सकते हैं। इसीलिए साबुन से हाथ को अच्छी तरह धोने के लिए कहा जाता है।

21. बाजार से विभिन्न वस्तुओं/सब्जियों/फलों आदि को पॉलिथीन बैग में लाना उचित नहीं है। इसके लिए हमें घर से कपड़े का थैला ले जाना चाहिए। पॉलिथीन का अपघटन नहीं हो पाता इस कारण मृदा के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव अन्नोत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा जानवर आदि भी इसे खा जाते हैं जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।

22. बिजली बचाने के लिए हम अपने स्तर से निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(क) जब आवश्यक हो तभी बल्ब, पंखे आदि जलाएँ/चलाएँ उन्हें अनावश्यक जलता हुआ/चलता हुआ न छोड़ें।

(ख) यदि सीमित रोशनी की आवश्यकता हो तो अधिक बोल्ट/ वाट के बल्ब का प्रयोग न करें।

(ग) बिजली का अपव्यय न हो इस हेतु ISI मार्क उपकरणों का इस्तेमाल करने के लिए अभिभावक से कहेंगे।

23. हमें भलीभाँति मालूम है कि स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ पर्यावरण अनिवार्य है। इसे स्वच्छ रखना हमारी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इसकी स्वच्छता हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं—

(1) एक पेड़ लगाकर उसे तैयार करने का संकल्प लें।

(2) न तो जल को दूषित करें, न करने दें।

(3) विवाह व अन्य समारोहों में ध्वनि विस्तारक यन्त्रों से ध्वनि प्रदूषण होता है। इस हेतु लोगों को जागरूक करेंगे।

(4) कूड़ा-कचरे को निर्धारित स्थान पर ही इकट्ठा करने के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे।

24. स्वच्छ भारत अभियान में हम अपने स्तर से यह योगदान दे सकते हैं कि विद्यालय/गाँव के साथियों के साथ अलग-अलग टोली बनाएँ और आस-पास के क्षेत्रों की साफ-सफाई करें। कूड़े-कचरे को निर्धारित स्थान पर एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण करवाएँ। इस तरह किया गया छोटा-छोटा प्रयास अन्ततोगत्वा बहुत बड़ी सफलता अर्जित करेगा।

25. 'नमामि गंगे' योजना केन्द्र सरकार द्वारा गंगा नदी के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए शुरू की गई है। इसके तहत नदी के ऊपरी सतह की सफाई से लेकर बहते हुए ठोस कचरे की समस्या को हल करने, घाटों के निर्माण, मरम्मत और आधुनिकीकरण का लक्ष्य शामिल है। यद्यपि गंगा नदी की सफाई इसके सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व और विभिन्न उपयोगों के कारण बहुत कठिन है किन्तु बेहतर भविष्य के लिए ठोस कदम उठाने ही पड़ेंगे।

26. ई-प्रदूषण—इलेक्ट्रानिक उपकरणों (मोबाइल फोन, टी.वी., रेफ्रिजरेटर आदि) के कचरे से उत्पन्न होने वाला प्रदूषण, ई-प्रदूषण कहलाता है। इस कचरे के कारण पर्यावरण में विभिन्न प्रकार की जहरीली गैसें बनती हैं जो स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इससे बचने के लिए ई-कचरे का वैज्ञानिक प्रबन्धन आवश्यक है अन्यथा धीरे-धीरे यह विकराल रूप धारण कर लेगा।

अध्याय–21 संवाद लेखन

1. **अपने घरों के आसपास स्वच्छता बनाए रखने पर दो छात्रों में संवाद**

विपिन— अरे मयंक! क्या तुम देख रहे हो कि हमारे मोहल्ले में कितनी गंदगी फैली हुई है।

मयंक— हाँ, विपिन मैं भी देख रहा हूँ। यह बहुत ही गलत है, हमें कुछ करना चाहिए।

विपिन— हाँ, हमें अपने घर के आसपास सफाई रखनी चाहिए, यह हमारी जिम्मेदारी है।

मयंक— बिल्कुल सही बात है। हमें कूड़ा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए और दूसरों की भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

विपिन— और हाँ, हमें अपने घर के आसपास की नालियों और गलियों को भी स्वच्छ रखना चाहिए। इससे बीमारियाँ नहीं फैलेंगी।

मयंक— हमें अपने पड़ोसियों को भी स्वच्छता के महत्व के बारे में बताना चाहिए।

विपिन— ठीक है, हम आज से ही शुरुआत करते हैं। हम अपने घर के आसपास की सफाई करेंगे।

मयंक— यह एक अच्छा विचार है। हम सब मिलकर अपने मोहल्ले को स्वच्छ और सुंदर बना सकते हैं।

2. **हिन्दी के गुरुजी के विषय में दो सहपाठियों के बीच संवाद**

विपुल— क्या बात है, चंद्रेश बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे हो?

चंद्रेश— हाँ भाई, विपुल, मैं अपने अध्यापक मोहित सर से मिलकर आ रहा हूँ।

विपुल— मोहित सर तो हमें हिन्दी पढ़ाते हैं। उनकी पढ़ाने की शैली बहुत अच्छी है।

चंद्रेश— हाँ मित्र, वह हमें बहुत अच्छे से और सरल तरीकों से समझाते हैं।

विपुल— तुम एकदम सही कह रहे हो। हिन्दी के अध्यापक जी हैं ही बहुत अच्छे। उन्होंने मुझे बहुत सारे कठिन शब्दों और व्याकरण को सीखने में बहुत मदद की है।

चंद्रेश— मुझे उनके पढ़ाने का तरीका तो पसंद है ही, लेकिन उनका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा है।

विपुल— सही बात है। मैं भी तुम्हारी इस बात से सहमत हूँ। उन्हीं के आशीर्वाद से मुझे हिन्दी में सबसे अधिक अंक मिले हैं।

चंद्रेश— बहुत-बहुत बधाई मित्र।

विपुल— धन्यवाद दोस्त! अब चलते हैं। मैं अपनी माँ को अंक दिखाने जा रहा हूँ।

चंद्रेश— ठीक है।

3. अच्छे संवाद लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

(अ) संवाद दिए गए विषय के अनुरूप होने चाहिए।

(ब) संवाद के प्रारंभ में उचित संबोधन और अभिवादन आदि का प्रयोग होना चाहिए।

(स) संवाद की भाषा पात्रों के अनुरूप और सरल होनी चाहिए।

(द) संवादों में आपकी तारतम्यता बनी रहनी चाहिए।

4. **योग से होने वाले लाभों के बारे में दो छात्रों के बीच संवाद**

वैभव— नमस्ते, ब्रजेश! कैसे हो?

ब्रजेश— नमस्ते वैभव! मैं ठीक हूँ तुम कैसे हो?

वैभव— मैं भी ठीक हूँ! सुना है तुम आजकल योग कर रहे हो?

ब्रजेश— हाँ, बिलकुल। मैंने योग करना शुरू करना शुरू कर दिया है। इसके बहुत फायदे हैं।

वैभव— अच्छा, क्या फायदे हैं? मुझे भी बताओ।

ब्रजेश— सबसे पहले तो योग से शरीर लचीला बनता है। मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं। फुर्ती आती है।

वैभव— यह तो बहुत अच्छी बात है और क्या लाभ हैं?

ब्रजेश— योग से मानसिक तनाव भी कम होता है। शांति और एकाग्रता बढ़ती है।

वैभव— यह तो बहुत बढ़िया है। मुझे भी योग करना चाहिए।

ब्रजेश— जरूर वैभव! योग से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होता है।

वैभव— ठीक है, कल सुबह मिलते हैं।

ब्रजेश— हाँ, अवश्य, मैं भी तुम्हारे साथ योग करने के लिए उत्सुक हूँ।

अध्याय–22 कहानी लेखन

1. **लालची कुत्ता**

एक कुत्ता था। वह लालची था। वह रोज मांस की दुकान पर जाता और मांस का टुकड़ा चुराया करता था। एक दिन दुकानदार ने उसे मांस चुराते देख लिया। वह कुत्ते के पीछे दौड़ा लेकिन कुत्ता भाग गया। कुत्ता भागता हुआ एक नदी के किनारे पहुँचा। नदी में उसे अपनी परछाईं दिखी। उसने समझा यह दूसरा कुत्ता है, जो मांस का टुकड़ा लिए हुए है। लालची कुत्ते ने सोचा कि यह मांस का टुकड़ा भी मुझे मिल जाए तो बहुत अच्छा हो। यह सोचकर वह परछाईं पर झपटा। जैसे ही भौंकने के लिए उसने मुँह खोला, उसके मुँह में लगा मांस का टुकड़ा भी नदी में गिर गया। लालची कुत्ते को भूखा ही रहना पड़ा।

शिक्षा—लालच बुरी बला है।

2. **कपटी मित्र**

एक जंगल में कौवा और हिरण रहते थे। दोनों पक्के मित्र थे। एक दिन कपटी सियार ने हिरण को देखा। हृष्ट-पुष्ट हिरण को देखकर सियार का मन उसका मांस खाने को हुआ। यह सोचकर उसने एक छल किया। वह हिरण के पास गया और मित्रता का प्रस्ताव किया। भोला हिरण कपटी सियार की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गया और उसे मित्र बना लिया। हिरण सियार को लेकर अपने मित्र कौवे के पास गया। कौवे ने सियार को देखकर हिरण से कहा कि तुम्हें बिना पूरा परिचय जाने मित्रता नहीं करनी थी, लेकिन ठीक है, सावधान रहना।

एक दिन सियार ने हिरण से कहा कि मित्र यहाँ से कुछ दूर एक गेहूँ का हरा-भरा लहलहाता खेत है, चलो वहाँ चलकर अपना पेट आराम से भर लेना। हिरण सियार के साथ चल दिया। जैसे ही हिरण खेत में घुसा, किसान द्वारा फैलाए जाल में फँस गया। बंधन में पड़े, हिरण ने अपने मित्र सियार को आवाज लगाई। सियार ने पास आकर देखा, हिरण अब पूरी तरह जाल में फँस चुका है, अब यह इसमें से नहीं निकल सकता। यह देखकर वह मन-ही-मन बहुत खुश हो गया कि किसान सुबह आकर इसे मार देगा और मुझे इसका मांस खाने को मिलेगा। हिरण की सहायता माँगने पर वह बोला—मित्र यह जाल ताँत का बना है और आज मेरा रविवार का व्रत है। इसलिए मैं ताँत को मुँह नहीं लगाऊँगा। यह कहता हुआ वह झाड़ियों में जाकर छिप गया।

काफी देर होने के बाद भी हिरण वापस नहीं आया तो मित्र कौवे को चिंता हुई और वह उसे ढूँढ़ने निकल पड़ा। खेत के पास आकर उसने हिरण को देखा और कहा—यह सब कैसे हो गया? हिरण बोला—मित्र यह तुम्हारी सलाह न मानने का नतीजा है। कौवा बोला—चलो जो हुआ सो हुआ, लेकिन मेरी बात ध्यान से सुनो, जब किसान आए तो तुम पेट

फुलाकर, पैर फैलाकर, मरे के समान पड़ जाना, हिलना-डुलना नहीं। सुबह किसान आया। उसने जाल में हिरण को पड़ा देखा और हँसते हुए बोला—यह तो मारने से पहले ही मर गया। यह कहते हुए वह जाल समेटकर जाने लगा। तभी कौए ने हिरण को भागने के लिए कहा। कौए की आवाज सुनकर हिरण छलाँग लगाता हुआ दौड़ा। किसान ने गुस्से में आकर फेंक कर लाठी मारी, जो झाड़ी में छिपे सियार को लगी और वह वहीं मर गया।

शिक्षा—पूरा परिचय पाए बिना मित्रता नहीं करनी चाहिए।

3. चिड़िया और चींटी

नदी किनारे एक वृक्ष पर एक चिड़िया रहती थी। उसी पेड़ के नीचे एक चींटी रहती थी। दोनों में मित्रता थी। एक दिन जब चींटी नदी में पानी पीने गई तो वह फिसलकर नदी में बहने लगी। चिड़िया ने देखा कि नदी के तेज बहाव में उसकी मित्र चींटी बही जा रही है तो उसने तुरंत पेड़ से एक पत्ता तोड़कर नदी में गिरा दिया। चींटी उस पत्ते पर बैठ गई। धीरे-धीरे तैरती हुई चींटी किनारे लग गई।

कुछ समय बाद एक दिन एक शिकारी बंदूक लिए वहाँ आया। चिड़िया को देखकर उसने उसे मारने के लिए बंदूक का निशाना साधा। चिड़िया की जान पर खतरा देख चींटी शिकारी के पास आई और उसके पैर में जोर से काट लिया। दर्द से बिलबिलाते शिकारी के हाथ से बंदूक छूट गई। आवाज सुनकर चिड़िया भी पेड़ से उड़ गई और उसकी जान बच गई।

शिक्षा—संकट-मुसीबत के समय हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए।

अध्याय–23 पत्रलेखन

1. **अवकाश के लिए प्रधानाचार्य जी को पत्र**

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

जयपुर (राज.)

महोदय,

विनम्र निवेदन है कि मेरे मामाजी की बेटी का शुभ विवाह दिनांक 20.02.20-- को होना निश्चित हुआ है। हम सपरिवार इस विवाह में सम्मिलित होने इंदौर जाएँगे। अतः मुझे दिनांक 18.02.20-- से 21.02.20-- तक चार दिनों का अवकाश देने की कृपा करें, आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राकेश गुप्ता

कक्षा–6

दिनांक : 17.02.20--

2. **विद्यालय बस को स्टॉप तक भिजवाने के संबंध में प्रार्थना पत्र**

सेवा में

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय

विवेकानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय

इंदौर

महोदय,

सविनय निवेदन है कि विद्यालय की बस संख्या–7 हमारी कॉलोनी के निर्धारित बस स्टॉप तक नहीं आती है और बाहर से मुड़कर चली जाती है। इस कारण अनेक छात्र विद्यालय जाने से रह जाते हैं या देरी से पहुँचते हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि उक्त बस चालक को निर्धारित बस स्टॉप तक बस ले जाने के लिए आदेशित करें ताकि सभी छात्र सुचारु रूप से विद्यालय जा सकें। आपकी अति कृपा होगी।

सादर, धन्यवाद

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

मोहिनी वर्मा

कक्षा–6

3. **विदेश में रह रहे मित्र को पत्र**

अलकापुरी

मथुरा (उ.प्र.)

भारत

दिनांक 20.12.20--

प्रिय मित्र, जोसेफ

नमस्ते! कैसे हो? मैं तुम्हें भारत के एक बहुत ही मजेदार त्योहार होली के बारे में इस पत्र के माध्यम से बताने जा रहा हूँ। यह रंगों का त्योहार है, जो हर वर्ष फाल्गुन (फरवरी–मार्च) के महीने में मनाया जाता है।

होली का त्योहार भारत में बहुत उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। लोग अपने घरों से बाहर निकलते हैं, एक दूसरे को रंग–गुलाल लगाते हैं। नाचते–गाते हुए त्योहार का आनंद लेते हैं। होली के एक दिन पहले होलिका दहन होता है। यह त्योहार दोस्ती, भाईचारे और एकता का संदेश देता है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें होली के बारे में जानकर अच्छा लगा होगा। अगर तुम कभी अमेरिका से भारत आओ, तो मैं तुम्हें होली के जश्न में जरूर शामिल करना चाहूँगा।

शेष कुशल। माँ–पिताजी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा दोस्त

विनय जायसवाल

4. **जयपुर निवासी मित्र को पत्र**

प्रिय मित्र दिनांक. 13.09.20--

वंश भार्गव

आशा है, सकुशल होगे।

तुम्हें यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता होगी कि मेरे विद्यालय ने नगरस्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वास्तव में ये सब विद्यालय के खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत और समर्पण का ही परिणाम है।

विद्यालय की इस शानदार उपलब्धि पर प्रधानाचार्य महोदय ने भी सभी खिलाड़ियों को सम्मानित किया और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि अगली राज्यस्तरीय प्रतियोगिता आपके शहर जयपुर में ही संपन्न होगी। उसी समय मेरी आपसे मुलाकात होगी। परिवार में सभी को यथायोग्य अभिवादन कहना।

तुम्हारा मित्र

निर्णय शर्मा

5. सेवा में

स्वास्थ्य अधिकारी

नगरपालिका देवास

विषय—सफाई कार्य की समुचित व्यवस्था के संबंध में

मान्य महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से कृष्णा बिहार कॉलोनी की शोचनीय सफाई–व्यवस्था की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। कृष्णा बिहार कॉलोनी में नगरपालिका के सफाई कर्मचारी समुचित सफाई नहीं करते हैं। लंबे समय तक वे कॉलोनी में नहीं आते। सफाई कर्मचारियों की उदासीनता के कारण कॉलोनी में गंदगी के ढेर लग गए हैं। नालियाँ अवरुद्ध होकर गंदा पानी सड़क पर फैलता रहता है। जो कभी भी महामारी का कारण बन सकता है।

अतः श्रीमानजी से प्रार्थना है कि समुचित कार्यवाही करके कृष्णा बिहार की सफाई व्यवस्था को समुचित कराएँ। आपकी अति कृपा होगी।

दिनांक : 17.07.20--

धन्यवाद!

प्रार्थी

अमित सिरोही

कृष्णा बिहार

देवास

अध्याय–24 अनुच्छेद लेखन

1. **योग भगाए रोग—**योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के युज् शब्द से हुई है। इसका एक अर्थ जोड़ना है। योग का अभ्यास शरीर और मस्तिष्क के विकारों को सही करता है। योग प्राचीन समय से मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया अनमोल उपहार है।

दैनिक जीवन में योग का अभ्यास करना हमें बहुत ही गंभीर बीमारियों से बचाता है। जैसे—कैंसर, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अवसाद और अन्य बहुत-सी मानसिक समस्याओं में भी योग लाभदायक है। एक स्वस्थ जीवन जीने के लिए नियमित योग की बहुत आवश्यकता है। आज के आधुनिक जीवन में तनाव काफी बढ़ गया है और आस-पास का पर्यावरण भी स्वच्छ नहीं है। इस स्थिति में हम 20-30 मिनट योगाभ्यास करके अपने जीवन को काफी बेहतर बना सकते हैं।

दैनिक जीवन में योगाभ्यास शरीर को आंतरिक और बाह्य शक्तियाँ प्रदान करता है। यह शरीर की रसायन प्रणाली को व्यवस्थित करता है। यदि योग नियमित रूप से किया जाए तो हम अनेक बीमारियों को दूर भगा सकते हैं और स्वस्थ जीवन का आनंद ले सकते हैं।

2. **समय का सदुपयोग**—किसी ने कहा है, समय धन से भी ज्यादा कीमती है। एक बार धन खर्च हो जाने पर दुबारा कमाया जा सकता है, लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। एक मशहूर कहावत है कि समय और अवसर किसी का इंतजार नहीं करते। एक बार गए तो दुबारा नहीं मिलते। समय कभी किसी का इंतजार नहीं करता। अत: समय के महत्व को समझना और उसका बुद्धिमानी से उपयोग करना जरूरी है। यदि हम समय को बर्बाद करेंगे तो समय हमारी जिंदगी को बर्बाद कर देगा। इसलिए समय की कद्र करें और उसका जीवन में सार्थक सदुपयोग करें। समय के सदुपयोग के लिए समयसारणी बनाएँ और नियमित दिनचर्या का पालन करें। व्यवस्थित जीवन शैली अपनाकर ही हम समय का सदुपयोग कर सकते हैं।

   समय से ही जीवन बना है। अत: समय के सदुपयोग का अर्थ है—जीवन को उन्नत और सफल बनाना। समय का सदुपयोग हमें अपने समय के प्रति सचेत रहने के लिए जागरूक करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि हमारे प्रयास भलाई और विकास के लिए ही हों।

3. **प्रात: भ्रमण**—प्रात: भ्रमण व्यायाम का ही एक रूप है। यह सबसे उपयोगी व्यायामों से एक है। प्रात: कालीन भ्रमण न केवल हमारे शरीर के लिए अच्छा है बल्कि हमारे मस्तिष्क को भी शांति देता है। प्रात: भ्रमण से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। मनुष्य के लिए प्रात:काल की सैर जितनी सुखदायक व रोमांचकारी होती है, उतनी ही स्वास्थ्यवर्धक भी होती है।

   सुबह के शांत वातावरण में चिड़ियों-पक्षियों की चहचहाहट और मधुर कूक तन-मन को प्रसन्नता से भर देती है। शरीर-विज्ञानियों के अनुसार जो व्यक्ति व्यायाम के अन्य रूपों को नहीं कर पाते, उनके लिए प्रात: भ्रमण एक अच्छा विकल्प है। प्रात:काल का दृश्य दिन के सभी दृश्यों के मुकाबले में अधिक मनोहर होता है। धरती के कण-कण में नया उल्लास और उमंग छा जाती है। ऐसे समय में भ्रमण करना बहुत ही लाभकारी होता है। प्रकृति प्रात:काल सभी जीवों को स्वास्थ्य का वरदान देती है। जो लोग प्रात:काल का भ्रमण करते हैं वे स्वस्थ जीवन बिताते हैं। इसलिए सभी को प्रतिदिन प्रात:काल के भ्रमण पर अवश्य जाना चाहिए।

4. **मेरा प्रिय खेल**—खेल कई प्रकार के होते हैं। मोटे-तौर पर इनको दो प्रकारों में बाँटा जा सकता है—इनडोर गेम्स और आउटडोर गेम्स। अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार ही हमें खेलों का चयन करना चाहिए।

   मेरा प्रिय खेल क्रिकेट है। आधुनिक युग में इस खेल को अंतर्राष्ट्रीय महत्व प्राप्त है। हमारे देश भारत में यह खेल सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र है। क्रिकेट का जन्म इंग्लैंड में हुआ था। यहीं से यह अन्य देशों में पहुँचा। भारत ने अपना

टैस्ट मैच इंग्लैंड के विरुद्ध सन् 1932 में खेला था। टैस्ट मैच के अलावा यह खेल चार दिवसीय, तीन दिवसीय, एक दिवसीय भी होता है। इस समय ट्वन्टी–ट्वन्टी तथा आई. पी. एल. का क्रिकेट बहुत प्रसिद्ध है।

क्रिकेट में दो टीम होती हैं। जिसमें प्रत्येक में 11–11 खिलाड़ी होते हैं। खेल आरंभ होने पर एक टीम बल्लेबाजी करती है तो दूसरी टीम क्षेत्र रक्षण। जीत–हार का फैसला रनों के आधार पर होता है। खेल के निर्णायक को अंपायर कहा जाता है।

क्रिकेट आज शहरों से लेकर गाँवों तक प्रसिद्धि पा चुका है। इसकी लोकप्रियता इस बात से सिद्ध होती है कि जब भी यह खेल आरंभ होता है तब जन समूह मैदान की ओर उमड़ पड़ता है। इस खेल में धन, शोहरत और आनंद का संगम है। यह केवल मेरा ही नहीं करोड़ों भारतीयों का पसंदीदा खेल है।

5. **मैं मेले में बिछुड़ गया**—हमारे शहर में प्रतिवर्ष दशहरे के मेले का आयोजन होता है। यह मेला दशहरा मैदान में लगता है। जिसे देखने शहर के लोगों के अलावा आस–पास के गाँवों से अनेकों लोग आते हैं। मैं भी अपने माता–पिता के साथ दशहरा मेला देखने गया था। शाम का समय था, मेले में बहुत अधिक भीड़ थी। मुख्य सड़क पर तो तिल रखने की भी जगह नहीं थी। लोग धक्का–मुक्की करते हुए आगे बढ़ रहे थे। हम लोग भी उसी भीड़ में घुसकर चल रहे थे। सड़क के आसपास मिठाई, चाट तथा अन्य खाने–पीने की दुकानें लगी थीं। तरह–तरह के खिलौनों की दुकानें थीं। गुब्बारे वाला, मुरलीवाला, आइसक्रीम वाला भी मेले में घूम रहे थे। घर–गृहस्थी के सामान की दुकानें भी थीं। मेले का आनंद लेते हुए हमने झूला भी झूला, इसके बाद जादूगर का खेल भी देखा। जादू का खेल समाप्त कर हम राम–रावण का युद्ध देखने पहुँचे। तभी अचानक एक घटना घटी। जैसे ही राम ने अग्निबाण रावण पर चलाया, तीनों पुतले धू–धू कर जलने लगे। इसके बाद भगदड़ मच गई। मैं अपने माता–पिता से बिछुड़ गया। घबराकर मैं रोने लगा। मेले में अब मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। मैंने अपनी परेशानी एक पुलिस अंकल को बताई, वो मुझे खोया–पाया केन्द्र पर ले गए, जहाँ पहुँचकर वे माइक से अनाउंसमेंट करवाने वाले ही थे, उसी समय मेरे माता–पिता मुझे ढूँढ़ते हुए वहाँ पहुँच गए। उन्हें देखकर मेरी जान में जान आई।

6. **मेरा मित्र 'टिंकू सजीला'**—मेरे मित्र का नाम टिंकू है। लेकिन सभी सहपाठी और गली–मुहल्ले के लोग उसे टिंकू सजीला कहते हैं। मेरे मित्र टिंकू का नाम टिंकू सजीला क्यों पड़ा, इसकी भी एक रोचक वजह है। मेरे मित्र को बचपन से ही सज–सँवरकर रहने का शौक है। नहा–धोकर वह साफ–धुले कपड़े पहनता है। बालों में तेल डालकर कंघी करता है। पैरों में जूते–मोजे, जेब में रूमाल, आँखों में चश्मा लगाए, वह किसी हीरो से कम नहीं लगता। यह उसकी आदत समझो या स्वच्छ रहने का गुण, वह हर समय सजा–सँवरा रहता है। इसलिए लोग उसे टिंकू सजीला कहते हैं। मेरे मित्र की स्वच्छ रहने की आदत के कारण ही मुझे वह पसंद है। टिंकू सजीला मेरी ही उम्र का है। वह मेरी ही कक्षा में पढ़ता है। उसका घर मेरे घर के सामने है। हम दोनों साथ–साथ विद्यालय जाते हैं। विद्यालय से लौटते समय भी हम–साथ–साथ आते हैं। शाम को और छुट्टी के दिन हम साथ–साथ खेलते हैं। टिंकू मेरा बहुत अच्छा मित्र है। वह पढ़ाई और खेल–कूद दोनों में कुशल है। परीक्षा नजदीक आने पर हम दोनों साथ–साथ पढ़ाई करते हैं। कभी मैं कक्षा में प्रथम स्थान लाता हूँ तो कभी टिंकू प्रथम स्थान प्राप्त करता है। मैं चाहता हूँ कि मेरी और टिंकू सजीला की मित्रता हमेशा बनी रहे।

7. **हमारी पिकनिक**—पिकनिक एक तरह का भ्रमण है, जो दोस्तों या परिवार के साथ खुले वातावरण में आयोजित किया जाता है। पिछले महीने हमारे पूरे परिवार ने शहर के एक पार्क में पिकनिक के लिए जाने का फैसला किया। पिकनिक से एक दिन पहले ही खुशी–खुशी हमने मिलकर योजना बनाई।

अगले दिन सामान पैक करके हम सुबह घर से निकल पड़े। पिकनिक स्पॉट हमारे घर से दो घंटे की दूरी पर था। रास्ते में जाते समय कार में हमने अंताक्षरी खेली। आखिरकार हम लगभग साढ़े दस बसे पिकनिक स्पॉट पर पहुँचे। यह नदी

के किनारे एक खूबसूरत जगह थी। जहाँ जगह-जगह छोटे पौधे, झाड़ियों और लंबे घने पेड़ थे। नदी के किनारे से ठंडी हवा माहौल को और आनंददायक बना रही थी। मैं और परिवार के अन्य सदस्य खेलने लगे। खेलते-खेलते हम थक गए। फिर सभी ने बैठकर खाना खाया। हम अपने घर से माँ के हाथ का बना खाना लेकर आए थे। वहाँ उस पिकनिक स्पॉट पर सभी के साथ मिल-बैठकर खाना खाया, जो बहुत ही स्वादिष्ट लगा। दोपहर का भोजन करने के बाद हमने नाव की सवारी की। फिर शाम को लगभग पाँच बजे हम घर के लिए निकल पड़े।

पारिवारिक पिकनिक पर मैंने जो यादें सँजोईं, वे कुछ ऐसे अविस्मरणीय पल थे, जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। पिकनिक ने न सिर्फ रोज की भागदौड़ भरी जिंदगी से एक सुकून ही दिया, बल्कि मुझे खुशी भी दी और अपने परिवार के साथ कुछ अच्छा समय बिताने का अवसर भी दिया। मुझे उम्मीद है कि हम भविष्य में और भी पिकनिक की योजना बनाएँगे।

अध्याय–25 निबंध लेखन

1. वसंत ऋतु

संकेत बिन्दु—• हमारे देश की ऋतुएँ • वसंत ऋतु का समय • वसंत की शोभा • मेरी सबसे प्रिय ऋतु वसंत।

हमारे देश की ऋतुएँ—हमारे देश में मुख्य रूप से चार ऋतुएँ होती हैं—शीत ऋतु (सर्दी), ग्रीष्म ऋतु (गर्मी), वर्षा ऋतु (मानसून) और शरद ऋतु (पतझड़)। शीत ऋतु दिसंबर से फरवरी तक होती है, जिसमें तापमान कम होता है और ठंड का मौसम रहता है। ग्रीष्म ऋतु जून से सितंबर तक रहती है, जिसमें बारिश होती है। शरद ऋतु अक्टूबर से नवंबर में आती है।

वसंत ऋतु का समय—वसंत ऋतु, जिसे ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है, फरवरी के अंत से अप्रैल तक रहती है। यह सर्दी और गर्मी के बीच का समय होता है, जब मौसम सुहावना हो जाता है, दिन लंबे होने लगते हैं और प्रकृति में चारों तरफ हरियाली छा जाती है। वसंत ऋतु की शुरुआत वसंत पंचमी के साथ होती है।

वसंत की शोभा—इस ऋतु में मौसम सुहावना हो जाता है, सर्दी कम हो जाती है। पेड़ों में नए पत्ते आने लग जाते हैं। सरसों के फूल खिलते हैं, आम के पेड़ बौरों से लद जाते हैं। हवा में मादक सुगंध भर जाती है। हरियाली का साम्राज्य हो जाता है। वसंत ऋतु को राग-रंग और उत्सव मनाने के लिए अच्छा समय माना जाता है।

मेरी सबसे प्रिय ऋतु—मेरी सबसे प्रिय ऋतु वसंत है। यह वह समय है जब प्रकृति नए-नए रंगों में सजती है। प्रकृति के हर कोने में हरियाली फैलती है। वसंत के मौसम में हवा में मिठास होती है। फूलों का खुशबूदार संसार हिलोरें लेता है। चारों ओर सौन्दर्य की छटा बिखर जाती है। बावरी-सी कोयल मधुर स्वर में कूकने लगती है। मुझे वसंत ऋतु इसलिए भी अच्छी लगती है कि शीत ऋतु के लंबे अवकाश के बाद हमारे स्कूल फिर से खुल जाते हैं। वसंत ऋतु का यह रूप मुझे बहुत प्रसन्न कर देता है। वसंत ऋतु के आगमन से मानव मात्र तो क्या प्रकृति भी आह्लादित हो जाती है।

2. समाचार पत्रों के लाभ

रूपरेखा— • समाचार-पत्रों की आवश्यकता, • प्रचलित समाचार-पत्रों के नाम, • समाचार पत्रों से हमें क्या लाभ होता है।

समाचार-पत्रों की आवश्यकता— प्रातःकाल उठते ही मनुष्य चाहता है कि सबसे पहले उसके हाथ अखबार पड़े। समाचार–पत्र आज हमारी दिनचर्या का अंग बन चुका है। कुछ लोगों के लिए तो अखबार एक नशे की तरह है। जब तक अखबार नहीं पढ़ लिया जाता, तब तक उन्हें चैन नहीं आता।

आज समाज और जीवन का हर क्षेत्र समाचार–पत्र से प्रभावित है। समाचार–पत्रों के माध्यम से हम घर बैठे देश–विदेश के समाचार प्राप्त करते हैं। समाचार–पत्र जन–चेतना का भी कार्य करते हैं।

समाचार-पत्रों के नाम— आज दैनिक समाचार–पत्रों के अतिरिक्त साप्ताहिक तथा पाक्षिक पत्र भी प्रकाशित हो रहे हैं। हिंदी के समाचार–पत्रों में राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, नई दुनिया, अमर उजाला, दैनिक जागरण तथा हिंदुस्तान आदि प्रमुख हैं।

समाचार-पत्रों से लाभ—समाचार–पत्रों से हमें अनेक लाभ हैं। इनके माध्यम से हमें दुनियाभर की घटनाओं, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों और व्यापारिक जानकारियों से अवगत होना शामिल है। समाचार–पत्र हमें जागरूक नागरिक बनने में मदद करते हैं, भाषा सुधारते हैं, साथ ही शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

संक्षेप में समाचार–पत्रों से हमें अग्रलिखित लाभ हैं— (i) ज्ञान और सूचना की प्राप्ति (ii) सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता (iii) भाषा सुधार (iv) शिक्षा का साधन (v) मनोरंजन (vi) विज्ञापन (vii) रोजगार (viii) व्यक्तित्व का विकास आदि।

3. हम पिकनिक पर गए

संकेत बिन्दु—• पिकनिक क्या है • स्थान का चुनाव • साथी • पिकनिक का आनंद • पिकनिक का महत्व।

पिकनिक क्या है?—पिकनिक एक प्रकार की मनोरंजक गतिविधि है, जिसमें लोग किसी बाहरी स्थान पर, जैसे पार्क, झील या नदी के किनारे भोजन करते हैं, यह अक्सर दोस्तों या परिवार के साथ किया जाता है और इसमें भोजन के साथ–साथ खेलकूद और अन्य मनोरंजक गतिविधियाँ भी शामिल हो सकती हैं।

पिकनिक के कुछ सामान्य प्रकार हैं—पारिवारिक पिकनिक, दोस्तों के साथ पिकनिक, स्कूल पिकनिक तथा दंपति पिकनिक। पिकनिक कैसी भी हो, इससे निश्चित रूप से सामाजिक मेलजोल बढ़ता है।

स्थान का चुनाव—विद्यालय के प्रधानाचार्य महोदय ने प्रार्थना सभा में घोषणा की कि कल विद्यालय के छात्र और अध्यापक पिकनिक पर जाएँगे। यह सुनते ही सभी में हर्ष की लहर दौड़ गई। तत्पश्चात् प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने मिलकर स्थान के बारे में विचार किया। रीता मैम ने शहर के प्रसिद्ध भगतसिंह पार्क का नाम सुझाया, तो सभी ने इस पर सहमति दे दी।

पिकनिक का आनंद—दूसरे दिन सभी समय पर पिकनिक के लिए तैयार होकर आ गए। हमारी पिकनिक की यात्रा सुबह शुरू हुई। बस की सवारी हँसी, गाने और बहुत उत्साह से भरी हुई थी। जैसे ही हम पार्क में पहुँचे, ताजी हवा और हरियाली ने हमारा मन मोह लिया। शिक्षकों ने हमारे लिए कई मजेदार गतिविधियाँ आयोजित कीं। हमने रस्साकशी, बैडमिंटन और म्यूजिकल चेयर जैसे खेल खेले। रस्साकशी में मेरी टीम विजेता रही।

दिन का मुख्य आकर्षण दोपहर का स्वादिष्ट भोजन था। हम सभी ने एक–दूसरे के साथ अपना भोजन साझा किया, जिसने पिकनिक के अनुभव को और सुखद बना दिया। दोपहर के भोजन के बाद हम में से कुछ लोग झील के किनारे बैठकर बातें करते और आराम करते रहे, जबकि अन्य हमारे शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रकृति की सैर पर गए।

जैसे-जैसे दिन खत्म होने लगा, हमने इन खूबसूरत पलों को कैद करने के लिए कई तस्वीरें क्लिक कीं। वापसी की बस यात्रा भी उतनी ही मजेदार थी, हालाँकि हम सभी थोड़े थके हुए थे, फिर भी हमने अंताक्षरी खेली और नई फिल्मों के गाने गाए।

पिकनिक का महत्व—पिकनिक का सबसे मुख्य महत्व यह है कि हम अपने दोस्तों और परिचितों के साथ घुलते-मिलते हैं, एक-दूसरे से घनिष्ठता बढ़ती है। खुले वातावरण में प्रकृति के साथ समय बिताने का अनोखा अनुभव होता है। सामूहिक भोज का अद्वितीय आनंद भी मिलता है। सामूहिक खेलों में खेल भावना का विकास भी होता है। मैं चाहता हूँ कि समय अंतराल पर इस प्रकार की पिकनिक का आयोजन होता रहे।

4. विद्यालय में छात्र सभा

संकेत बिन्दु—● विद्यालय का परिचय ● छात्र सभा का परिचय ● छात्र सभा के आयोजन का उद्देश्य ● छात्र सभा से छात्रों को लाभ।

विद्यालय का परिचय—विद्यालय एक ऐसा संस्थान है, जो छात्रों को ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो उन्हें एक सफल और जिम्मेदार नागरिक बनाने में मदद करता है। मेरा विद्यालय शहर के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों में माना जाता है। मेरे विद्यालय का नाम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय है। मेरे विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं प्रधानाचार्य जी बड़े ही मनोयोग से छात्रों को शिक्षा देते हैं, साथ ही अन्य शिक्षणेतर गतिविधियों को भी सुचारु संपन्न करवाते हैं, जिससे छात्रों का बहुमुखी विकास हो सके। ऐसी ही एक शिक्षणेतर गतिविधि है- विद्यालय की छात्र सभा।

छात्र सभा का परिचय—मेरे विद्यालय की छात्र सभा छात्रों द्वारा निर्वाचित सभा है, जो स्कूल के मामलों में छात्रों का प्रतिनिधित्व करती है। छात्र सभा में पद हैं—**अध्यक्ष**—श्री मोहन लाल मीणा, **उपाध्यक्ष**—श्री राजेश गहलोत, **सचिव**—अजय कुलश्रेष्ठ, **कोषाध्यक्ष**—श्री पुनीत अग्रवाल हैं। इसके अलावा हमारी छात्र सभा में ग्यारह सामान्य सदस्य हैं, छात्र सभा के समय सभी पदाधिकारी, सदस्य एवं छात्र-छात्राएँ शामिल होते हैं।

छात्र सभा के आयोजन का उद्देश्य—विद्यालय की छात्र सभा के आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को एक मंच प्रदान करना है, जहाँ वे अपनी बात रख सकें और विद्यालय समुदाय में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। इसके अतिरिक्त, छात्र सभा जिम्मेदारी, सहयोग और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने में भी मदद करती है।

छात्र सभा से छात्रों को लाभ—विद्यालय की छात्र सभा से छात्रों को कई लाभ होते हैं। यह छात्रों को अनुशासन, नेतृत्व और सार्वजनिक भाषण जैसे कौशल विकसित करने में मदद करती है। इसके अलावा, यह छात्रों में एकता और समुदाय की भावना को भी बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त छात्र सभा छात्रों को सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिक मूल्यों का विकास, सकारात्मक दृष्टिकोण तथा रचनात्मकता का विकास आदि लाभ प्रदान करती है। संक्षेप में, छात्र सभा छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है। यह छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि सामाजिक, भावनात्मक और सांस्कृतिक रूप से भी विकसित होने में मदद करती है।

5. मेरे माता-पिता

संकेत बिन्दु—● माता-पिता का जीवन में महत्व ● पिताजी और माताजी का संक्षिप्त परिचय ● परिवार में दोनों का स्थान और महत्व ● मुझ पर माता-पिता का अपार स्नेह ● माता-पिता के प्रति मेरा कर्तव्य।

माता-पिता का जीवन में महत्व—माता-पिता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। वे हमारे पहले शिक्षक, मार्गदर्शक

और सबसे बड़े शुभचिंतक होते हैं। माता–पिता हमें जन्म देने से लेकर, हमारा पालन–पोषण करने और हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने तक, हर कदम पर हमारा साथ देते हैं। उनका निस्वार्थ प्रेम, समर्थन और मार्गदर्शन हमारे जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की भावना प्रदान करता है।

पिताजी और माताजी का संक्षिप्त परिचय—मेरे पिताजी का नाम श्री देवेश है। मेरे पिताजी एक बैंक में कैशियर के पद पर कार्य करते हैं। मेरी माताजी का नाम श्रीमती मोहिनी है। मेरी माताजी एक सुगृहिणी हैं।

परिवार में दोनों का स्थान और महत्व—परिवार में माता–पिता का स्थान सर्वश्रेष्ठ है और महत्व बहुत अधिक है। परिवार में रहकर माता–पिता बच्चों के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करते हैं, जिस पर वे अपना जीवन बनाते हैं। उनके मार्गदर्शन और समर्थन के बिना, बच्चों का समुचित विकास नहीं हो सकता। इसलिए माता–पिता का स्थान और महत्व परिवार में सबसे ऊपर है।

मुझ पर माता–पिता का अपार स्नेह—मेरे माताजी–पिताजी मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मैं अपनी सारी परेशानियाँ अपने माता–पिता के साथ साझा करता हूँ और वे धैर्यपूर्वक मेरी बात सुनते हैं। माता–पिता मेरे लिए हमेशा मौजूद रहते हैं। चाहे स्कूल के कार्यक्रमों में शामिल होना हो या बीमारी में देखभाल करते हुए साथ रहना हो या रविवार या छुट्टी के दिन मेरे साथ समय बिताना हो। मेरी हर जरूरी आवश्यकताओं को वह तुरंत पूरा कर देते हैं। अच्छे काम के लिए वे मेरी तारीफ भी करते हैं। मैं भी अपने माता–पिता को बहुत प्यार करता हूँ।

माता–पिता के प्रति मेरा कर्तव्य—माता–पिता के प्रति मेरा कर्तव्य है कि मैं उनकी देखभाल करूँ। मैं ऐसे कार्य करूँ जिससे माता–पिता को प्रसन्नता प्राप्त हो, कभी भी ऐसे कार्य न करूँ जिससे माता–पिता को कष्ट हो। इसके अतिरिक्त माता–पिता को निराश न करना और उनकी जरूरतों का ध्यान रखना भी प्रमुख कर्तव्य है।